सुकृत के सहभागी

राजेन्द्रकुमार अमृतलाल शाह परिवार -नागपुर

अरुणाबेन-राजेन्द्रकुमार शाह

रुची-अमीत, अरहन

मेघा-प्रशांत, वीर, हितांश

प्रीति-विशाल, भव्य, आर्य

विक्रम बाल वार्ता

(भाग-2)

: संकलन :

पूज्य उपाध्याय श्री **विश्रुतयशविजयजी** म.सा.

अनंत लब्धिनिधान
श्री गौतमस्वामी भगवान

जैनरत्न व्याख्यान वाचस्पति-कविकुलकिरीट
पू. दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय
लब्धिसूरीश्वरजी म.सा.

नित्यभक्तामर स्तोत्र समाराधक
तीर्थ प्रभावक पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय
विक्रमसूरीश्वरजी म.सा.

श्री पार्श्वनाथ-पद्मावती समाराधक-गीतार्थ गच्छाधिपति
पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय **राजयशसूरीश्वरजी** म.सा.

विद्वानवक्ता-ज्योतिषज्ञ पू. आचार्यदेव
श्री **रत्नयशसूरीश्वरजी** म.सा.

विद्वान साहित्यकार पू. उपाध्याय
श्री **विश्रुतयशविजयजी** म.सा.

युवा प्रवचनकार पू. आचार्यदेव
श्री **वीतरागयशसूरीश्वरजी** म.सा.

मातृहृदया सरलस्वभावी पू. साध्वीवर्या
श्री **सर्वोदयाश्रीजी** म.सा.
(पू.माँ.म.सा.)

परम विदुषी-एकादशांगपाठी
पू. साध्वीवर्या
श्री **रत्नचूलाश्रीजी** म.सा.

शासन प्रभाविका-प्रकृष्ट पुण्यनिधि
पू. साध्वीवर्या
श्री **वाचंयमाश्रीजी** म.सा.
(पू.बेन म.सा.)

मधुरभाषी-पल्लिवाल प्रवेशोद्धारिका
पू. साध्वीवर्या श्री **शुभोदयाश्रीजी** म.सा.

Supported By

1. Vasant Atma Cheritable Trust -Ahmedabad
2. Sanghvi Manoribai Kavarlalji Baid, Saral Parasmani - Manish, Deepak, Vishal -Chennai
3. Shrimati Menabai Prakashchandji Chuttar -Ashok Bankers, Shivrampet, Mysore
4. Vimlaben Hirjibhai Shah, Samir-Rita, Jayesh Talat -Shantakruz, Mumbai
5. Manan Rajendra Shah -Ambawadi
6. Lt. Sarojben Ramanlal Shah Parivar Nishita Nishit Shah, Dhyana Nishit Shah -Ahmedabad
7. Jyotiben Unmeshbhai Shah Parivar -Ahmedabad
8. Harshi, Miska, Kiah, Niryan, Arham, Vinaben Rasiklal Gandhi, Panna Sandipbhai Parikh – Mumbai, Palanpur, Dubai
9. Avika, Shweta, Shreyansh, Manjulata Sureshchand Jain -Jaipur, U.S.A.
10. Shrikant Lalitkumar Mehta, Utsavi Minal Bhavik Mehta –Cuttack
11. In memory of Late Munna raja Sampatlalji Rampuria
    Naina, Manmal, Abhishek, Asha or Begani & Sonali, Rishi Jain & Family
12. Ranjanben Piyushbhai Shah Haste Maitri Viral Shah -Ankleshwar, Pune
13. Madhuben Chothmal Parivar –Thara, Surendra Guruji –Banglore
14. Surajdevi Gulabchand Munot Parivar –Kheragadh, Raipur, Tatanagar
15. Arvind Babulal Shah -Mumbai
16. Arvindaben R Gandhi -U.S.A.
17. Memory of SANAT dada and Most lovable Mom Shakuntala by Kiaan Shah.

E-Book Link

Book Name	Link
Sukt Ratnavali a book of 511 Qautations (Sanskrit,Gujarati, English)	https://archive.org/details/SuktRatnavali
Outline of Jainism (English, French, Kannad etc)	https://archive.org/details/outline-of-jainism-Eng-Kannad
Biographies of 5 Glorious Jain Acharyas (English)	https://archive.org/details/biographies-of-5-glorious-jain-acharya
Updeshmala Karnika Granth (Prakrit Sanskrit, English)	https://archive.org/details/updeshmala-karnika-granth
Ahimsa Hee Amrutam (English)	https://archive.org/details/ahimsaheeamrutam
Ahimsa Hee Amrutam (Regional Indian Languages)	https://archive.org/details/ahimsa-hee-amrutam
Labdhi Bal Varta (1 to 12 Part) 612 Stories in English	https://archive.org/details/Labdhi-Bal-Varta
Vikram Bal Varta (Part-1) (Hindi and English)	https://archive.org/details/vikram-bal-varta
Panch Pratikaman Sutra (Gujarati, Hindi, English)	https://archive.org/details/panch-pratikraman-sutra-guj-hin-eng_202011
Jindarshan Pujan Vidhi (Hindi)	https://archive.org/details/jindarshan-pujan-vidhi
Aadarsh Shravak Jivan (Hindi)	https://archive.org/details/aadarsh-sravak-jivan
Tale of Tarang Vati (English)	https://archive.org/details/tarangavati

विक्रम बाल वार्ता

(भाग-2)

: संकलन :

पूज्य उपाध्याय श्री विश्रुतयशविजयजी म.सा.

विक्रम बाल वार्ता

(बहादुरी पुरस्कृत बच्चों की सचित्र पुस्तक) (भाग-2)

भाषा : हिन्दी
आवृत्ति : प्रथम
नकल : 3,000
किंमत : 150

प्राप्ति स्थान :
अहमदाबाद
चिंतन शाह : 93757 87857
मेहुलभाई शाह : 94263 24200

INDEX

E-Book Link : https://

मुद्रक : जय जिनेन्द्र ग्राफिक्स, अहमदाबाद
जय जिनेन्द्र : 98250 24204, कुश : 99256 17992

प्रवेशक

वीरता के बीज, साहस, आत्मविश्वास और कुछ करने की जिज्ञासा को बचपन में लगाइ जाए तो वह बालक पेड़ जैसे गुणों से व्याप्त सर्वोत्कृष्ट नागरिक बनेगा।

कथाएँ हमारे जीवन को जीने की नई दिशा दिखाती हैं। ये हमें जीना और जीतना सिखाती हैं। पुराने जमाने में माता-पिता, दादा-दादी और शिक्षक बच्चों को कथा के माध्यम से सिखाते थे।

अब समय बदल गया है। नई तकनीक, छोटे परिवार, कामकाजी माता-पिता, इन सब के चलते कथा शैली लुप्त हो गई है। विक्रम बाल वार्ता-2 कहानी सुनाने का एक अनूठा प्रयास है जो बच्चों को आध्यात्मिक और रोचक यात्रा करवाएगा। यह बच्चों का उनके माता-पिता के साथ का संबंध और गहरा बनाएगा।

एक से बढ़कर एक, ये बहादुरी की कहानियाँ हमें वीर बनने की और विपरीत परिस्थित में शीघ्र निर्णयशक्ति सिखाती हैं। ये सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं, अपितु बड़ों के लिए भी प्रेरणादायी है ।

आशा है, यह पुस्तक आपके बच्चे की हमारी संस्कृति से जोड़ने में सक्षम होगी और इसके जिज्ञासुओ के मन की प्यास बुझाएगी। जाने अनजाने में जिनाज्ञा के विरुद्ध हमने कुछ लिखा हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

हम श्रीमती विजया कोटेचा -चेन्नई, क्रिषा आदित घेलाणी -सुरत, शिल्पा शाह -सुरत, मानसी प्रशांत शाह -भरुच, राज भास्कर, सतीश मरडिया-अहमदाबाद एवं सभी अर्थ सहयोगीयों को साधुवाद देते हैं । अंतिम चार आचार्यो की कहानी में तस्वीरे कुमारपाल देसाई की अनुमती से ली है ।

उपा. विश्रुतयशविजय (प्रोफेसर महाराज)
वणछरा जैन श्वेताम्बर तीर्थ -करजण-पादरा, वडोदरा

दि.: 25 जनवरी 2024

1. बहादुर स्कंदगुप्त

युवराजने हठ पकड़ ली, "पिताजी आप मुझे आज्ञा दीजिये। मैं रणभूमि में दुश्मनों से युद्ध लडने जाऊँगा।"

महाराजने युवराज की किशोर अवस्था को देखते हुए कहा, "बेटा ! दुश्मन, क्रुर स्वभाव के हैं, वे कपट के साथ युद्ध लडते हैं। वे स्त्री, वृद्ध, अशक्त या बालक - किसी के प्रति दया नहीं रखते, निर्दयतापूर्वक उन्हें मार डालते हैं।"

परंतु युवराज भी मौत से डरनेवाला नहीं था। उसने अपने पिताजी से कहा, "क्षत्रिय को मृत्यु का डर कैसा? मैं देश की रक्षा के खातिर अपने प्राणों की आहुति देने को भी तैयार हूँ।"

पुत्र की वीरतापूर्ण बातें सुनकर पिता का दिल अपूर्व आनंद से भर गया। उन्होंने अपने पुत्र को रणक्षेत्र में जाने की इजाजत दे दी।

वो युवराज था स्कंदगुप्त और उनके पिता थे मगध नरेश कुमारगुप्त।

हुणों की एक विशाल सेना हिमालय के उस पार जमा हो रही थी। वहाँ से मगध व अन्य राज्यों पर हमला करने की उनकी योजना थी।

महाराज कुमारगुप्त को ये समाचार मिलते ही वे सावधान हो गये। तुरंत ही उन्होंने अपने अधिकारीयों को आदेश देकर युद्ध की तैयारी कर ली थी।

स्कंदगुप्त को इस बात का पता चलते ही उसने भी युद्ध में अपना कौशल दिखाने की हठ पकड ली, और उस युद्ध में जाने की अनुमति भी मिल गई।

राजकुमार स्कंदगुप्त मगध के दो लाख चुनिंदा योद्धाओं को लेकर वाजते-गाजते मगध से युद्ध के लिए निकल पडा। हिमालय के दुर्गम रास्तें व बर्फीली हवाओं की चिंता किये बिना वो आगे बढता गया। और हिमालय के उस पार पहुँच गया। उसे देखकर हुणों की सैना चौंक गई।

हुण हमेशा भारी सेना लेकर लडने निकलते थे और निर्दयतापूर्वक सामनेवाले पर हमला करते थे।

लेकिन यहां तो उल्टा हो गया, उल्टा सामने वाला उन हुणों पर हमला करने उनकी छाती पर आ खडा था।

उनके सामने एक किशोर घोडे पर सवार होकर नंगी तलवार लिये सामने से आ रहा था।

अब हुणों के पास भागने का समय भी शेष नहीं था, अब हुण सेना भी सामना करने को तैयार हो गई।

स्कंदगुप्त और उसके वीर सिपाही हुण सेना पर कहर बनकर टूट पडे। वो जहाँ से भी निकलते उस युद्ध के मैदान में दुश्मन के कटे सिरों का ढेर लगता गया। स्कंदगुप्त ने समरभूमि में रंग जमा दिया। एक ही झटके में दो दो सैनिक के सर धड से अलग हो रहे थे। स्थिति ये आ गई कि स्कंदगुप्त जहाँ से भी गुजरता दुश्मन चिल्लाने लगता, "अरे भागो कालमुखी आ रहा है।" इस भयंकर वार से हुण सेना तितर-बितर होकर भागने लगी। थोडे ही समय में हुण सेना हिम्मत हार गई। और दुश्मन जहाँ से रास्ता मिलता उस और से भागने लगे। थोडी ही देर में रणभूमि खाली हो गई। इस तरह स्कंदगुप्त ने हुणों पर ज्वलंत विजय प्राप्त की।

हुणो पर विजय प्राप्तकर स्कंदगुप्त स्वदेश मगध पहुँचा तो उसका भव्य स्वागत हुआ। लंका विजय करके राम अयोध्या आये तब राम का जैसा स्वागत हुआ, वैसा स्वागत स्कंदगुप्त का मगध में हुआ।

स्कंदगुप्त जब स्वयं मगध के राजा बने तब उन्होंने आज के इरान और अफगानिस्तान तक अपने राज्य का विस्तार किया। ऐसे महान राजा भारत वर्ष में बहुत ही कम हुए। इस बात का इतिहास गवाह हैं।

2. बाला का साहस

धन्य है रोबुआपुई! पानी के भंवर में कूदते हुए, उसने अपनी जान की परवाह किए बिना अपनी सहेलीयों को बचाया

पूर्वोत्तर राज्य मिजोरम, जो पहाड़ों की भूमि है, शानदार पहाड़ियों और बीहड़ों से घिरा हुआ है। मिजोरम राज्य में एक आकर्षक शहर समुद्र तल से 4,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। वहां से पूर्व में तलवांग नदी की घाटी और उत्तर में कर्टलांग की सुंदर पहाड़ियों को देखा जा सकता है। यह 3 मार्च 2016 की घटना है। कुछ छात्र तुइवाब नदी के किनारे पिकनिक मनाने गए थे। जैसे ही लड़कियाँ नदी की ओर जाने लगीं, उनके शिक्षक ने उन्हें चेता, ''लड़कियों, नदी का बहाव तेज है। इसके अलावा, चूंकि यह एक चट्टानी नदी है, तो नदी में घुमाव होंगे, इसलिए नदी में स्नान न करें।'' इसका ख्याल रखें, इस पत्थर पर बहुत सारे शैवाल हैं, जैसे ही रोबुआपुई इस बारे में बात कर रही थी, उसकी सहेली का एक पैर फिसल गया और नदी की धारा में बहने लगी। यह देखकर दूसरी सहेली ने उसका हाथ पकड़ा और उसे बचाने की कोशिश की, लेकिन शैवाल की वजह से वह भी फिसल गई और खुद को बचा नहीं पा रही थी। दोनों सहेलीयों में से कोई भी तैरना नहीं जानता था। अचानक सभी ने रोबुआपुई की साहस, हिम्मत और कुशलता के साथ उनकी ओर तैरते हुए देखा। नदी का पानी 18 फीट तक गहरा था। फिर भी बिना किसी डर के, वह आगे बढ़ी और जैसे ही वह घुमाव में फंसी अपनी एक सहेली के पास पहुंची, उसने उसके बालों को पकड़ लिया और उसे किनारे पर खींच लाई।

जैसे ही रोबुआपुई अपनी सहेली को किनारे पर धकेला, उसे किनारे पर खड़े लोगों ने बाहर निकाला। उसने अपनी दूसरी सहेली साराह को भी बचाया। लेकिन अब वो बहुत थक चुकी थी। पानी के तेज बहाव के सामने उसकी हिम्मत टूट रही थी और वो डूबने लगी। यह देख, उनमें से एक ने जाकर बस के ड्राइवर को इस बारे में बताया। ड्राइवर तेजी से आया और उसे बचाने के लिए नदी में कूद गया, लेकिन दुर्भाग्य से, दो या तीन घंटे की कड़ी मेहनत के बाद, रोबुआपुई का शव मिला। मिजोरम में रोबुआपुई की बहादुरी की प्रशंसा की जाने लगी। मिजोरम के स्थानीय समाचार पत्रों ने उस बहादुर लड़की के साहस, धैर्य और समयबद्धता का विवरण प्रकाशित किया, जिसने उसकी दो सहेलीयों की जान बचाई। रोबुआपुई के माता-पिता ने 23 जनवरी 2017 को राजधानी नई दिल्ली में देश के प्रधान मंत्री के हाथों पुरस्कार स्वीकार किया।

नैतिक शिक्षा : धन्य है रोबुआपुई - दूसरों को बचाने के लिए पानी में कूद गई, जान चली गई पर सहेलीयों को बचा लिया। हमे भी प्रेरणा लेनी चाहिए, दूसरों के लिए जान की बाजी लगानी चाहिए।
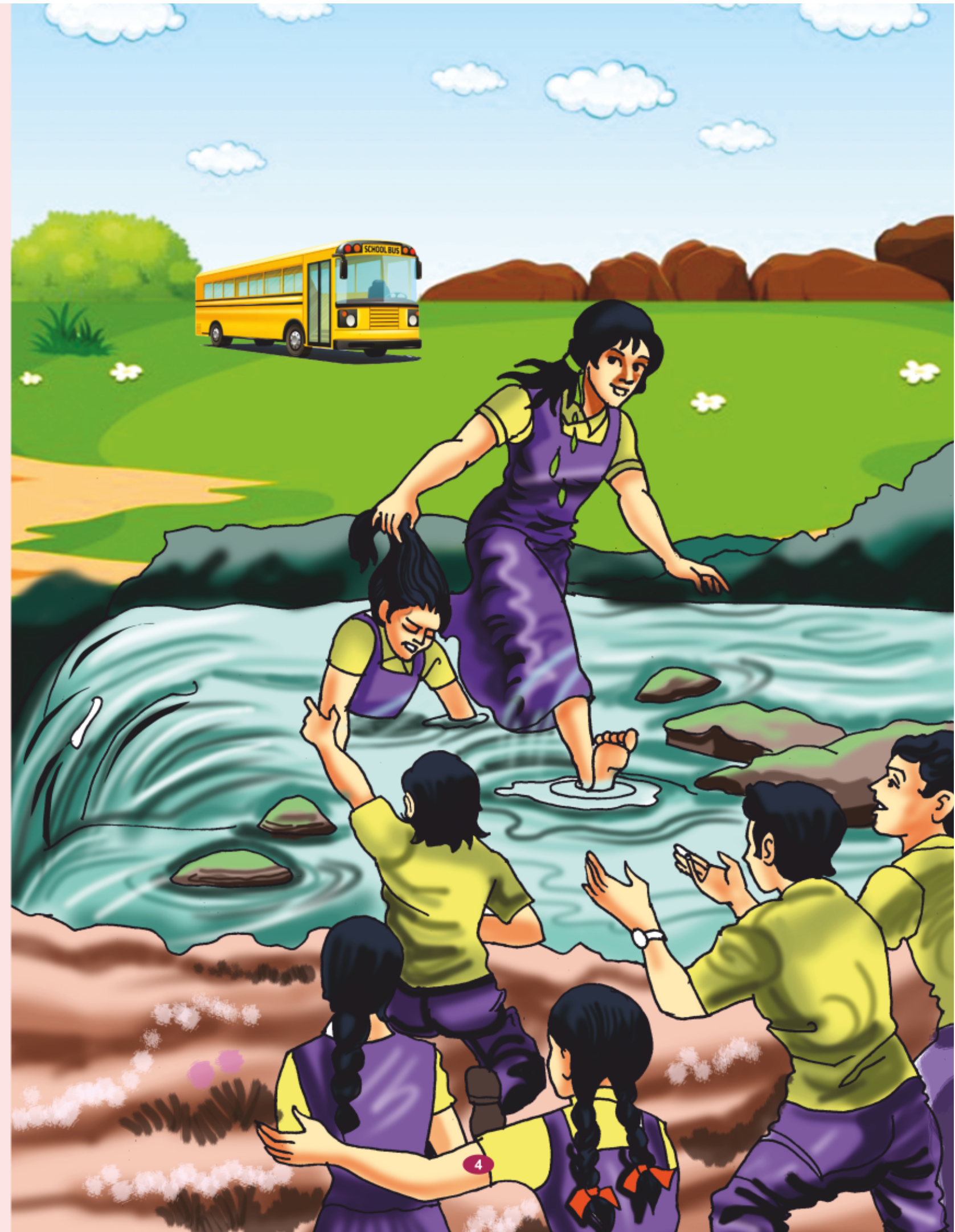
3. बचाई बच्चे की जान

अकिब मोहम्मद

अश्मिल की माँ ने अपने सिर पर कपड़ों का एक बंडल उठाया। तो अश्मिल ने भी कुछ धुलाई सामग्री ली और साथ-साथ चलने लगा। चलते-चलते दोनों छलिया नदी के किनारे आ गए। अश्मिल ने धुलाई सामग्री अपनी मां को सौंप दी और नदी की रेती में खेलने लगा। अश्मिल, नदी के पानी के पास छींटाकशी करने लगा। ऐसा करते ही उसका पैर अचानक फिसल गया। वह चिल्लाया: 'अम्मा ... अम्मा...'

'अरे, अश्मिल,' अश्मिल को पानी में डुबते देख उसकी मां के होश उड़ गए। सहेजें... सहेजें... उसकी चीख सुनकर एक लड़का दूर से भागते हुए आता नजर आया। जैसे ही वह पास आया, यह अकीब मोहम्मद था। वह तैरना जानता था।

अकीब आते ही दौड़ा और सीधे पानी में कुद पड़ा। वह कुछ ही देर में तैरते हुए अश्मिल के पास पहुंच गया। उसने अश्मिल के बाल पकड़ लिए। अश्मिल हाथ पैर मार रहा था। अकिब उसे किनारे पर खींचकर ले गया। आकिब की समयबद्धता और साहसी काम ने एक बच्चे की जान बचाई। 7 दिसम्बर 2013 की बात है। यह किस्सा दक्षिण भारत में केरल के कोझिकोड जिले में मावूर तालुका में मजदूर नामक एक छोटे से गांव में बना था। प्रेस के माध्यम से घटना की सूचना मिलते ही आकिब की बहादुरी और साहसी करतब की चर्चा आसपास के समुदाय के चारों ओर होने लगी। इस बारे में जानने पर, अकिब महोम्मद एन को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार 24 जनवरी 2015 के दिन दिल्ली में प्रदान किया गया था।

नैतिक शिक्षा : अपनी कला की सार्थकता किसी के काम आ जाने में ही है।

4. साहस की कीमत

तुलदेव ने छोटे से बच्चे को बचाया

मणिपुर राज्य भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। उत्तर में, नागालेन्ड पश्चिम में आसाम से मिलता है, दक्षिण में मिजोरम और पूर्व में इस राज्य की सीमा हमारे पड़ोसी देश म्यान्मार से मिलती है। मणिपुर अपनी विशिष्टता के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। यहाँ का वातावरण आनंददायक है और मौसम सुंदर है। इम्फाल मणिपुर की राजधानी है। पश्चिम इम्फाल में यिस्कुल किचुहांबा लीकाई (झील) के आसपास के क्षेत्र में बिखरे हुए घर हैं। यहाँ नौ साल के तुलदेव शर्मा का घर भी है। तुलदेव खड़ा हो घर के बाहर आया। वह यार्ड में बाथरूम में चला गया। पेशाब करते ही उसकी नजर सामने वाली झील पर गई। उसने एक तीन साल के बच्चे को झील के किनारे कुछ लेने के लिए नीचे झुके हुए देखा। बच्चे का पैर फिसल गया और वह छह फीट गहरी झील के पानी में गिर गया। तुलदेव ने जाकर तालाब में लड़के की कमीज का कॉलर पकड़ लिया। लेकिन तुलदेव को नहीं पता था कि उसे तालाब से कैसे बाहर निकाला जाए। उसे तैरना भी नहीं आता था। लड़के को बाहर खींचते समय अगर उसका अपना पैर फिसल जाता है, तो वे दोनों तालाब में डूब जाएंगे। लेकिन तुलदेव ने दूरदर्शिता का प्रयोग किया। पास में ही बांस का खंभा था और दूसरे हाथ से पकड़ लिया। और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। सभी उसकी ओर भागे, तुरंत जाकर दोनों लड़कों को खींच सुरक्षित रूप से बाहर निकाला गया। इम्फाल के अखबारों में जैसे ही यह घटना छपी, वैसे ही इसकी जानकारी लेने वाले तुलदेव के साहस की सराहना करने लगे। 15 अगस्त 2013 को जब यह घटना हुई तो राष्ट्रीय बाल कल्याण परिषद ने तुलदेव शर्मा का नाम राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए चुना और 24 जनवरी 2015 को उन्हें प्रधानमंत्री द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

नैतिक शिक्षा : तुलदेव को अपने जीवन के आखरी वक्त तक यह संतोष रहेगा की उसने अपनी जिंदगी में किसी की जान बचाई। हमें भी ऐसा मौका मिले तो छोड़ना नहीं चाहिए।

5. सिया ने जीया

वाह! सिया ने अपने भाई को बचाया

बात 14 अप्रैल 2015 की है। सिया अपने छोटे भाई और अपने चाचा की बेटियों के साथ आंगन में खेल रही थी। पता नहीं कब उसका भाई छत पर पहुँच गया और सिया को आवाज देने लगा। सिया अपने भाई को इधर-उधर ढूँढ रही थी। अचानक उसे अपना भाई दिखाई दिया। वह स्तंभ था और बोल नहीं पा रहा था। देखते ही सिया को एहसास हुआ कि वह बिजली के तार के संपर्क में आ गया है। वह कांप रहा था। स्कूल में उन्हें सिखाया गया था कि लकड़ी, कपड़ा आदि को इंसुलेटर कहा जाता है, इसलिए अगर ऐसी कोई चीज होती है, तो बिजली का करंट नहीं लगता। उसने हर जगह देखा और अपने भाई के करीब गई। उसने अपने भाई की कमीज पकड़ी और उसे कसकर खींच लिया। ऐसा करने पर उसका भाई बिजली के तार से अलग हुआ लेकिन बेहोश होकर गिर गया। बहुत जोर से खींचते हुए सिया भी गिर गई। अपने छोटे भाई को बेहोश देख सिया मदद के लिए चिल्लाने लगी। सिया की आवाज सुनकर उसके मम्मी पापा दौड़ पड़े। सिया ने अपने भाई की ओर उंगलियों से इशारा किया। सिया के पापा ने सिया को खड़ा कर दिया। तो उसकी माँ बेहोश छोटे भाई को गोद में लेकर रोने लगी। 'प्रिय भाई को क्या हो गया है?' उसके पिता ने पूछा। 'वह बिजली के तार से चिपका हुआ था। मैंने शर्ट को पकड़ लिया और उसे खींच लिया, इसलिए वह मुक्त हो गया लेकिन बेहोश हो गया।' अस्पताल ले जाते ही सिया के भाई की जान बच गई। इलाज प्राप्त होते ही उसे होश आया। सिया वामनासा खोडे की समय की पाबंदी, निडरता और समय रहते एक साहसिक निर्णय ने अपने भाई की जान बचा ली। जब पड़ोस और गांव के लोगों ने इस पर चर्चा की तो सभी उसकी खूब तारीफ करने लगे। उसका नाम 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' के लिए चुना गया। 23 जनवरी 2017 को, उसे उसके वीर और निडर काम के लिए देश के प्रधानमंत्री, द्वारा 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। कर्नाटक के लोगों को गर्व महसूस होने लगा कि दस साल की एक छोटी बच्ची सिया कर्नाटक राज्य की एक बहादुर लड़की के रूप में दिल्ली पहुँची।

6. नील पर्वतों की भूमि

बहन जिसने अपने भाई के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया

शानदार पहाड़ों और घाटियों से घिरे भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में मिजोरम को 'नील पर्वतों की भूमि' या 'पहाड़ी लोगों की भूमि' कहा जाता है।

यह कहानी है मिजोरम के ऐसे ही एक पहाड़ी इलाके में ढलान पर बसे एक गाँव की है। 18 मार्च 2013 की सुबह एक घटना हुई थी। तेरह वर्षीय लड़की एच. लालरियातपुई, उनके बड़े भाई और एक दो वर्षीय लड़का, बगल में रहनेवाले उनके चाचा का बेटा, सिलेंडर खरीदने के लिए शहर गए। जल्द ही सिलेंडर और चावल खरीदकर वे अपनी कार से गांव लौट रहे थे।

अचानक लालरियातपुई के भाई को लगा कि कार का टायर पंचर हो गया है। वह कार को एक तरफ ले गया और नीचे उतरकर टायरों को देखने लगा। चावल की बोरि को उस तरफ रखा गया था जहां टायर पंचर हो गया था, इसलिए उन्होंने सोचा कि बोरि को दूसरी तरफ रखें ताकि समस्या पैदा न हो।

"ठीक है भाई। मुझे आपकी मदद करने दें।" लालरियातपुई ने कहा। कार से नीचे उतर कर दोनों भाई-बहन चावल की बोरियों को आगे-पीछे घुमाने लगे। वहाँ, ढ़लान पर कार फिसलने लगी। लालरियातपुई ने देखा कि नीचे एक गहरी घाटी थी। कार में चाचा का दो साल का बेटा बैठा था। लालरियातपुई और उनके भाई ने कार को रोकने की बहुत कोशिश की और बहुत ताकत लगाई लेकिन उनकी सारी कोशिश बेकार हो गई। लालरियातपुई को उसके भाई ने दूर जाने के लिए कहा क्योंकि कार इस तरह से भाग रही थी कि लालरियातपुई की जान को खतरा था। फिर भी लालरियातपुई कार को रोकने की कोशिश करती रही।

यहाँ उसने छोटे बच्चे को बचाने और बाहर निकालने के लिए कार का दरवाजा खोला, वहाँ वह जमीन पर गिर गई क्योंकि कार के दरवाजे से उसे टक्कर लग गई थी। कार के नीचे आते ही वह गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे अस्पताल ले गये लेकिन वह बच नहीं सकी।

उसने चाचा के बेटे को बचाने के प्रयास में अपने जीवन का बलिदान दिया। मिज़ोरम सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' के लिए उसके नाम की सिफारिश की गई थी। बच्चों के लिए 'बापू गायधनी पुरस्कार' एच. लालरियातपुई को देने की घोषणा की गई। 13 साल और 10 महीने की लड़की द्वारा किए गए साहसिक काम के लिए मरणोपरांत और उस बहन के लिए जिसने अपनी जान की परवाह किए बिना अपने छोटे भाई को बचाने के लिए अपना जीवन लगा दिया। तदनुसार, 23 जनवरी 2017 को, दिल्ली में देश के प्रधानमंत्री के हाथों लालरियातपुई के माता-पिता ने पुरस्कार स्वीकार किया।

नैतिक शिक्षा : "परोपकाराय सतां विभूतयः" इस सुभाषित को सार्थक करने के लिए न केवल धन बल्कि अपनी जान भी हमे दाव पे लगा देनी चाहिए। एक गाँव की छोटीसी लड़की भी इस को चरितार्थ करने हेतु अपनी जान की बाजी लगा देती है तो हमें भी इससे शिक्षा लेनी चाहिए।

7. साहस रखें

मिथुन एक कुएं में कूदता है और एक लड़के की जान बचाता है

"पिताजी, मुझे साइकिल चलाना सिखाओ," श्रीहरि ने कहा। "हाँ, यह सही है, इसे दे दो... इसे दे दो... अगर श्रीहरि साइकिल चलाना सीख जाता है, तो वह घर के काम में मेरी मदद करेगा। उसकी माँ ने कहा श्रीहरि रास्ते में अपने दोस्त रामेश्वर से मिला और कहा कि वह साइकिल चलाना सीखना चाहता है और उसे साथ चलने के लिए कहा। वे दोनों अब्दुल चाचा की साइकिल की दुकान पर गए। 'चाचा, हमें किराए पर साइकिल चाहिए।' श्रीहरि ने कहा। रामेश्वर और श्रीहरि साइकिल लेकर वहाँ से निकले।

"ठीक है, अभी साइकिल चलाना शुरू करो। मैं पीछे से पकडता हूं।," रामेश्वर ने पीछे से श्रीहरि को सहारा देते हुए कहा। श्रीहरि ने मैदान में साइकिल चलाना शुरू कर दिया। उसने दो-तीन राउंड साइकिल चलाई। रामेश्वर को लगा कि श्रीहरि अब अपना संतुलन रखना जानता है, इसलिए उसने पीछे से साइकिल पकड़ना बंद कर दिया। श्रीहरि अब अकेले साइकिल चला रहा था। "अब एक बड़ा राउंड लो।" रामेश्वर ने उसे कहा। अचानक सामने से जीप को पूरी रफ्तार से आता देख श्रीहरि घबरा गया और घबराकर साइकिल को सड़क के एक तरफ लाने लगा। उसे नहीं पता था कि बगल में एक कुआँ था। वह जोर से कुएं के दीवार से टकरा गया। साइकिल एक तरफ गिर गई, लेकिन श्रीहरि कुएं में गिर गया। रामेश्वर, जो श्रीहरि को बचाने की हिम्मत नहीं कर पाया, वह रोने और चिल्लाने लगा।

मिथुन दूर से आ रहा था। उसने दृश्य देखा। जैसे ही वह पास आया, उसने कुएं में देखा, कि एक लड़का अंदर गिर गया था। कुआँ करीब आठ फीट गहरा था। मिथुन ने ज्यादा सोचे बिना एक साहसिक फैसला लिया और कुएं में कूद गया। उसने श्रीहरि को बचाया और उसे बाहर निकाला। श्रीहरि कीचड़ से गंदा हो गया और उसे थोड़ी चोट भी लगी। यह 12 जनवरी 2014 की बात है। यह घटना दक्षिणी भारतीय राज्य केरल के हुन्नार जिले के पोरोरा तालुका के छोटे से गांव चिथिरा फोत्राडी में हुई। 14 साल के इस युवा लड़के ने बड़ी हिम्मत और सूझबूझ से अपनी जान जोखिम में डालकर एक जवान लड़के की जान बचाई। जैसे ही उसके उद्यम की चर्चा चारों ओर फैल गई, मिथुन पी.पी. का नाम नई दिल्ली में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद को भेजा गया। 24 जनवरी 2015 को, मिथुन को प्रधानमंत्री के हाथों राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, और केरल में उनके छोटे से गांव में खुशी का त्योहार शुरू हो गया।

नैतिक : शिक्षा : दुर्लभ मनुष्य जन्म में हमें किसी की जान बचाने का मौका मिलें तो पूरी कोशिश करनी चाहिए।
It is an opportunity not an obstacle.

८. मोझिक्कारा गाँव का रत्न

दो बच्चों की जान

'नसीम, माँ सही कह रही थी। अभी नदी में ज्वार-भाटा है। उन बड़ी लहरों को देखो।' संजय ने कहा।

दोनों अब पानी की धारा में ठीक से तैर नहीं पा रहे थे। डूबते हुए 'बचाओ बचाओ..' दोनों चिल्लाने लगे। दूर खड़ा खेलने आया लड़का अंजीत था। वह दौड़ता हुआ आया और 15-20 फीट गहरे पानी में कूद गया। अंजीत अच्छी तरह से तैरना जानता था। तैरते हुए वह नसीम के पास पहुंचा। उसने नसीम के बाल पकड़ लिए और खींचते खींचते उसे किनारे पर ले आया। फिर अंजीत नदी के पानी की तेज धार में कूद गया। उसने संजय की तलाश शुरू कर दी। संजय ने पानी पी लिया था और अर्ध-बेहोशी की हालत में था। काफी मशक्कत के बाद अंजीत ने संजय को बाहर निकाला और किनारे पर ले आया।

इसी बीच गांव के अन्य लोग भी पहुंच गए। संजय और नसीम दोनों की जान, उन्हें प्राथमिक उपचार देकर बचाई गई। गांव में अंजीत की बहादुरी और साहसिक कारनामे की चर्चाओं का माहौल था। 15 दिसम्बर 2013 की बात है। घटना की कहानी दक्षिण भारत के हुन्नूर जिले के थलासेरीटा तालुका के मोझिक्कारा नामक एक छोटे से गांव से दिल्ली पहुंची। अंजीत को 24 जनवरी 2015 को प्रधानमंत्री के हाथों राष्ट्रीय बाल कल्याण परिषद, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

नैतिक शिक्षा : देश रक्षा की शपथ लेकर एक सैनिक युद्ध में अपनी जान की बाजी लगा देता है लेकिन बिना किसी भी जिम्मेदारी एक नैतिक फर्ज समझ के अपनी जान को खतरे में डाल के दूसरों को बचाने के प्रेरणा उपरोक्त दृष्टान्त से प्राप्त होती है।

९. साहस ही जीवन

हमलावर से भिड़ीं अंशिका पांडे

उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में लोग जागते ही अपने काम पर जाने की जल्दी में होते हैं। उस समय अंशिका पांडे भी साइकिल से स्कूल के लिए निकली थी। 14 सितंबर 2015 की बात है। उसे स्कूल जाने में थोड़ी देर हो गई थी। वह तेजी से साइकिल चलाती ट्रिन... ट्रिन... घंटी बजाती, मुश्किल से 500 मीटर की दूरी तक पहुंच गई होगी जब एक एसयूवी कार उसके पास आई। ड्राइवर ने कार रोकी और अंशिका को खड़े होने का इशारा किया। ''क्या है?'' अंशिका ने पूछा। ''हम बाहर से आए हैं। क्या आप मुझे दिखा सकते हैं कि यह जगह कहां पर आई है?'' सामने वाले ने कहा। उसके हाथ में कागज के पन्ने पर एक पता लिखा हुआ था।

अंशिका ने पता पढ़ा और जगह दिखाने लगी। ड्राइवर ने कहा, ''मुझे समझ में नहीं आ रहा है। आप इस पीछे बैठे सर को दिखाइए।'' तो अंशिका ने अपनी साइकिल को थोड़ा पीछे किया और पता दिखाना शुरू कर दिया। उसी समय कार का पिछला दरवाजा खोलकर बैठे हुए शख्स ने अंशिका के बालो को पकड़ लिया और उसे कार में खींचने की कोशिश की। अंशिका ने अपने पैरों को कार के दरवाजे में डाल दिया ताकि इसे बंद न किया जा सके। उसने अपने बालों से छुटकारा पाने की कोशिश की। लेकिन उस आदमी ने उसे कसकर पकड़ लिया।

ड्राइवर ने बोतल खोली और उसका ढक्कन अपने पास रखा और बोतल को आदमी को दे दिया। उसने बोतल का तरल पदार्थ अंशिका की आँखों में डालने की कोशिश की। अंशिका ने तीखे दाँत उसके हाथ में गाड दिए और वह चिल्लाया। उसी दौरान उसके हाथ से बोतल कार में जा गिरी। उसी समय अंशिका की एक सहेली वहां आ गई। उसने देखा कि अंशिका उस आदमी के साथ संघर्ष कर रही है। उसने मदद के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया, ''बचाओ ... बचाओ ...'' यह देखकर उस आदमी ने अंशिका के चेहरे पर चाकू मारने की कोशिश की, क्योंकि उसे लगा कि वह पकड़ा जाएगा। लेकिन जब अंशिका को इसका एहसास हुआ, तो उसने अपना बायां हाथ आगे किया। जिससे उसके हाथ पर घाव हो गया। चाकू से घायल होने के कारण घाव से खून बहने लगा।

इस दिशा में अंशिका की सहेली रास्ते में वाहन चालकों को रोकने और मदद के लिए कोशिश कर रही थी। इसलिए गुंडे को अब इस जगह पर रहने से डर लग रहा था। उसने कई बार जबरदस्ती दरवाजा बंद करने की कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली तो आखिरकार उसने अंशिका को कार से धक्का दे दिया और भाग गया। घायल अंशिका और उसकी सहेली को देखकर एक रिक्शा चालक रुक गया। उन्हें अस्पताल ले गया।

सहेली ने अंशिका के माता-पिता को सूचित किया और वे भी आ गए। अस्पताल में पट्टी बांधकर इलाज कराने के बाद घर आई अंशिका। स्कूल के प्रिन्सिपल और सभी छात्रों को भी इस घटना के बारे में तब पता चला जब उन्होंने प्रार्थना सभा में बात की। अंशिका स्कूल आई। उन्हें स्कूल परिवार द्वारा सम्मानित किया गया। अंशिका ने निडर होकर हमलावरों का इस तरह से सामना किया और उसके अद्भुत साहस के लिए सभी के द्वारा उसकी प्रशंसा की गई। उत्तर प्रदेश की रहनेवाली सुश्री अंशिका पांडे चौदह साल और आठ महीने की थीं। उनके वीरतापूर्ण प्रतिकार के लिए 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' की सिफारिश की गई थी। स्वीकार किए जाने पर उन्हें 23 जनवरी 2017 को राष्ट्रीय बाल कल्याण परिषद, नई दिल्ली द्वारा देश के प्रधानमंत्री के हाथों 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

नैतिक शिक्षा : सूझ-बुझ से काम लेना चाहिए, ताकि विकट परिस्थिति से भी निपटा जा सके।
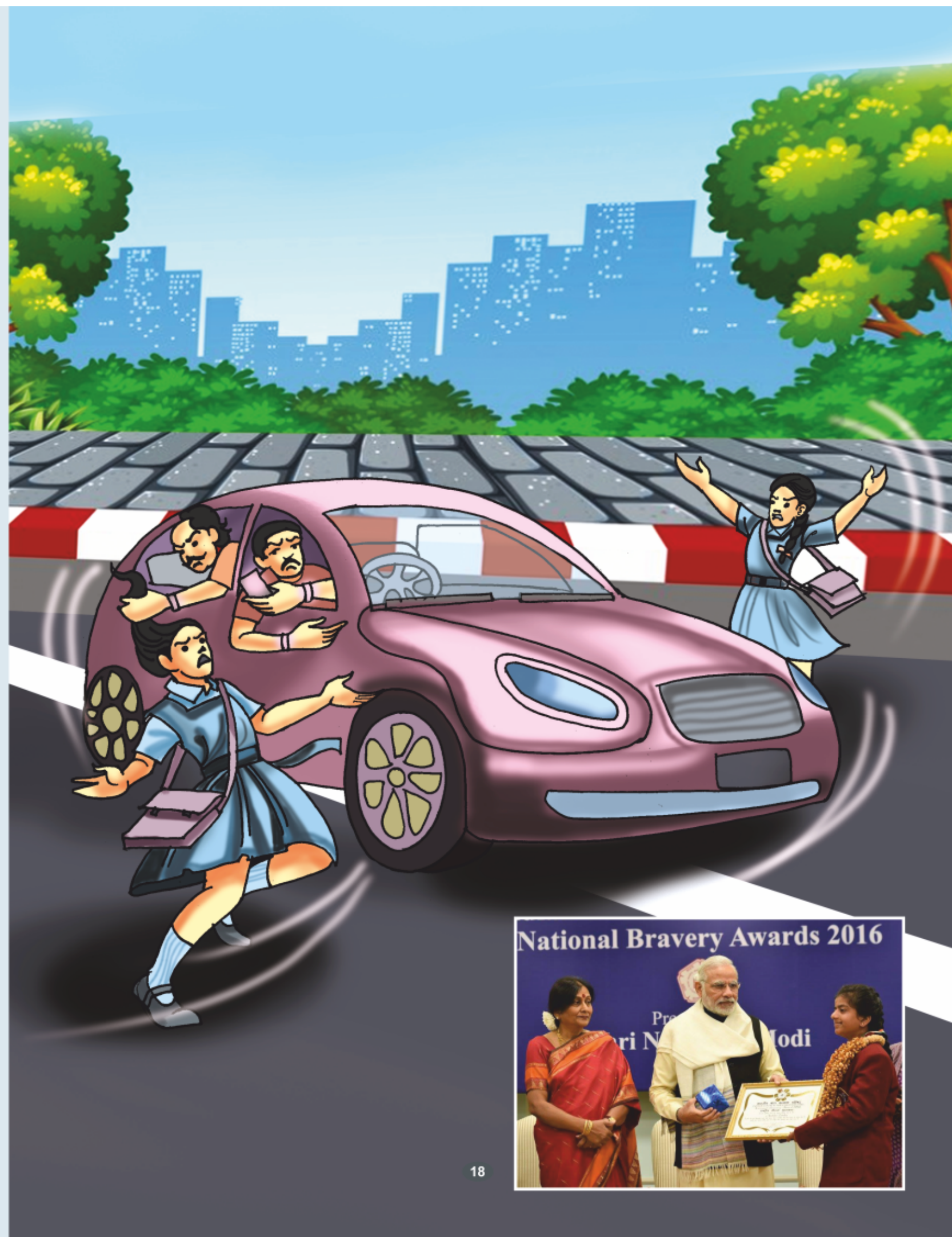
National Bravery Awards 2016

10. पानी से मजाक भारी पड़ा

मेघालय के साहसी स्टीवेन्सन ने बचाई जान

मेघालय भारत के उत्तर-पूर्व में प्रकृति की अतुलनीय विरासत के साथ एक राज्य है। यहां का अधिकांश क्षेत्र जंगलों और घनी झाड़ियों से ढका हुआ है। इस राज्य में कुल सात जिल्ले हैं। हरा-भरा गांव मायरंग, राजधानी शिलांग के नजदीक स्थित 'खासीहिल' के मुख्यालय, निंग स्टोइन के पास स्थित है। यह घटना 4 जुलाई 2013 के दिन की है। क्यूंकि बारिश का मौसम पहले ही शुरू हो चुका था, इसलिए झील में नया पानी आने से बाढ़ आ गई थी। सरकारी हाई स्कूल झील के विपरीत किनारे पर स्थित था। केल्विनस्टोन और उनके तीन दोस्त झील के किनारे खेल रहे थे। उसके दोस्त ने केल्विन से कहा, 'आज सुबह से बारिश नहीं हो रही है, केविन। यहाँ बहुत घुटन हो रही है। चलो स्नान करते हैं। ''केन्विन ने पहेले मना किया, पर जैसे दोस्तों ने उसकी झूठी तारीफ की, केन्विनस्टोन झील में स्नान करने के लिए तैयार हो गया। चारों मित्र झील के किनारे गए, अपने कपड़े किनारे रख दिए और नहाने लगे। साथ ही, वे एक-दूसरे का मजाक उड़ाते हुए एक-दूसरे को पानी के छींटे से भिगोना शुरू कर देते है। 'बचाओ... बचाओ...' पहले उसके दोस्तों ने सोचा कि वह मजाक कर रहा है, इसलिए उन्होंने उचित ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब उन्होंने देखा कि केल्विन वास्तव में डूब रहा था, तो वे भी डर गए। क्योंकि उनमें से कोई भी तैरना नहीं जानता था। अब सभी दहशत में चिल्लाने लगे। उस समय स्कूल की छुटटी हो चुकी थी। सामने आते हुए स्टीवेन्सन लारिनियांग को एहसास हुआ कि ये लड़का पानी में डूब रहा था। वह तुरंत झील की ओर भागा। उसने अपना थैला झील के किनारे रखा और अपने कपड़े उतारकर झील में कूद गया। झील का पानी 6 से 8 फीट गहरा था। स्टीवेन्सन तैरना जानता था। इसलिए उसने डूबते हुए केल्विन को बालों से पकड़ लिया और उसे किनारे की ओर खींचना शुरू कर दिया। इसके बाद उसके दोस्तों ने उसकी मदद की। अंत में, स्टीवेन्सन ने अपने साहस, बहादुरी और समय की पाबंदी के साथ केल्विनस्टोन को बचा पाया। स्टीवेन्सन के साहसिक कार्य ने एक जीवन बचाया। जब स्टीवेन्सन का नाम राष्ट्रीय बाल कल्याण परिषद द्वारा सुझाया गया, स्टीवेन्सन लारिनियांग को 24 जनवरी 2015 को दिल्ली में प्रधानमंत्री के हाथों राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नैतिक शिक्षा : किसी के उकसाने पर अपनी शक्ति-सामर्थ्य को जरुर जांचना चाहिए और किसी के भी सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

11. सच्ची दोस्ती

मिजोरम के मेसक ने एक दोस्त के लिए अपनी जान दे दी

देश के उत्तर-पूर्व में मिजोरम नाम का एक खूबसूरत राज्य है। थंगसाई नगर से 14 किलोमीटर दूर टियाओ नदी बहती है। यह 28 नवंबर 2016 का दोपहर का समय है। कुछ ने सोचा कि मौसम अच्छा है तो चलो दूर तक कहीं घुम आते हैं। "अंकल, क्या आप टियाओ नदी पर जा रहे हैं?" मेसक ने पूछा। 'ठीक है... ठीक है... यह ठीक है, हम बस टहलने के लिए जाना चाहते हैं और वहां स्नान करना चाहते हैं।' सभी लड़के ट्रैक्टर ट्रॉली में चढ़ गए। 'जब तक कि आप पत्थरों के ढेर के साथ आते हैं, तब तक नाहके हम यही खेलते हुए मिलेंगे ' मेसक ने कहा। ये 'लालहुथड़ा कहाँ है? सभी दोस्तों ने चारों ओर देखा। लालहुथड़ा उनका मित्र था। अगर वह हमारे साथ आया था, तो वह कहाँ गया था? बात चल ही रही थी कि मेसक की नज़र नदी की धारा तरफ चली गई। 'अरे, देखो... देखो। यह पानी में कितनी दूर चला गया है।' 'मुझे लगा कि वह तैर रहा है। अब क्या होगा?' उनके मित्र ने चिंता व्यक्त की। मेसक ने एक पल की देर किए बिना नदी में छलांग लगा दी और लालहुथडा की ओर जाने लगा। यहां पानी की गहराई 5 फीट थी। नदी के तेज प्रवाह से मेसक भी धबराने लगा। परंतु उसने लालहुथड़ा को पकड़ लिया। अब उसकी ताकत भी जवाब देने लगी। तट पर खड़े दोस्त आवाज करने लगे। इतने में ट्रेक्टर वाला आया और तुरंत नदी में कूद पड़ा। वह दोनों लड़कों की ओर तैरते हुए गया। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। ट्रैक्टर चालक ने दोनों लड़कों को बाहर निकाला और दोस्तों की मदद से उन्हें ट्रैक्टर में डालकर शहर के अस्पताल में ले आया। लेकिन डॉक्टर ने उनकी जांच की तो दोनों को मृत पाया गया। 'ऐसा तब हुआ है जब मेसक ललहुथड़ा को बचाने के लिए गया था। उसने बहुत निर्भीकता और बहादुरी से तैरने में सक्षम नहीं होने के बावजूद नदी में कूदकर अपने दोस्त की जान बचाने की कोशिश की। 24 जनवरी 2015 को मेसक के मरणोपरांत राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार दिया गया तब उनके माता-पिता की आंखों में यह स्वीकार करते हुए आंसू भर आए । प्रधानमंत्री ने मेसक की वीरता की सराहना की और बहादुर बच्चे को श्रद्धांजलि अर्पित की।

नैतिक शिक्षा : आज तो धन की, स्वार्थ की यारी निभाने वाले मिलेंगे, निस्वार्थ जान की बाजी लगाने वाले बहुत विरले होते है ।

12. आत्मरक्षा ही राष्ट्ररक्षा तक ले जाएगा

अक्षित एवं अक्षिता शर्मा ने जान जोखिम में डालकर चोर को पकड़ा

दिल्ली शहर के भीड़भाड़ वाले ट्रैफिक से गुजरने के बाद स्कूल बस रिहायशी इलाकों की ओर बढ़ गई। दोनों भाई-बहन कंधे पर दफ्तर रखकर बस से उतरे। घर आकर देखा तो सामने का लोहे का दरवाजा खुला हुआ था। दोनों ने प्रवेश किया। उनके फ्लैट की लकड़ी का दरवाजा बंद था। उसने दरवाजा खटखटाया। अंदर से आवाज आई। 'कौन है?' अक्षित और अक्षिता को आवाज अपरिचित लगी। अक्षिता हैरान थी जब उसने दरवाजे के ऊपर वेंटिलेटर के माध्यम से देखने की कोशिश की। दो अज्ञात लोग घर के ड्राइंग रूम मे घूम रहे थे। इस बीच अक्षित दरवाजा खटखटाता रहा। एक चोर सामान लेकर बालकनी से कूदकर फरार हो गया। एक और चोर को बालकनी के पास आता देख अक्षित ने अपना स्कूल बैग एक तरफ फेंक दिया और उसकी तरफ भागा। चोर के दोनों हाथों में एक बैग और दूसरा सामान था। दोनों भाई-बहनों ने चोर को कसकर पकड़ लिया और जोर-जोर से चिल्लाने लगे, ' चोर... चोर...' बहार भीड़ ने उसे पकड़ लिया। पुलिस ने अक्षित एवं अक्षिता को थाने आने के लिए कहा ताकि पुलिस को यह तथ्य बताया जा सके कि चोर कैसे पकड़ा गया! पुलिस चौकी में गए। वहां शिकायत दर्ज की गई। पुलिस इंस्पेक्टर ने दोनों छोटे भाई बहनों द्वारा दिखाए गए साहस और उनके द्वारा चोर को बहादुरी से गिरफ्तार करने के लिए किए गए कार्यों की सराहना की। सूचना के आधार पर पुलिस ने एक अन्य चोर को भी दबोच लिया। यह मामला 8 दिसम्बर 2015 का है। 23 जनवरी 2017 को जब अक्षित एवं अक्षिता शर्मा को प्रधानमंत्री ने 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' से सम्मानित किया तो उनके माता-पिता और पड़ोसियों सब को बहुत खुशी हुई।

नैतिक शिक्षा : जो अपनी रक्षा स्वयं करता है पूरी प्रकृति उसे सहयोग करने लगती है।
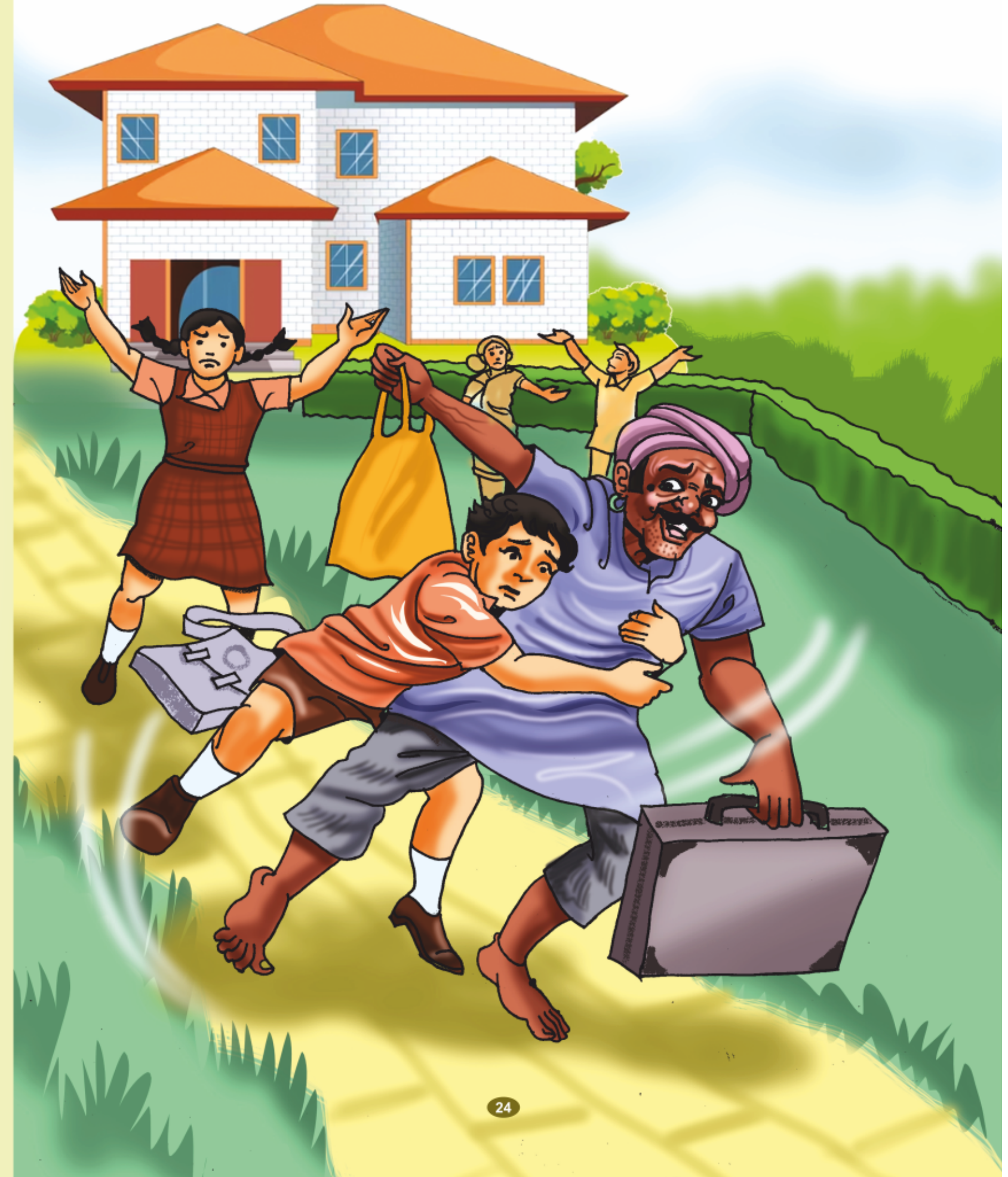
13. गंगा मैया कैसे डूबने दे ?

गंगा नदी के उफनते बहाव में दो लोगों की जान बचाता है लाभांशु

उत्तराखंड ऋषिकेश और केदारेश्वर जैसे तीर्थ स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र और घने जंगल की प्राकृतिक सुंदरता मंत्रमुग्ध कर देने वाली है। देश के विभिन्न हिस्सों से और विदेशों से भी कई तीर्थयात्री यहां आते हैं और गंगा में नहाने का लाभ उठाते है। गर्मी में बर्फ पिघलने के कारण जब बाढ़ आती है तो नदी बेकाबू हो जाती है। सोमेश्वरनगर ऋषिकेश में गंगा के किनारे दयानंद आश्रम सडक पर स्थित है। यहां पहलवान बाजार अच्छी तरह से जाना जाता है। घटना 24 मई 2014 की है। उस दिन दोपहर के समय, सूरज अपने सिर पर था। 15-16 साल का एक युवक बहती गंगा के किनारे कुश्ती का अभ्यास कर रहा था। लाभांशु ने दो आदमी को पानी पीने के लिए नदी में उतरते देखा। उसको ऐसा हुआ कि मैं उसे रोक दूं, लेकिन इससे पहले ही उस आदमी का पैर फिसल गया। उनमें से कोई भी तैरना नहीं जानता था। लाभांशु को स्थिति का अंदाजा हो गया। वह अचानक भागा और उफनती नदी में कूद गया। उस समय व्यायाम से अपने शरीर को मजबूत बनाने वाले लाभांशु उन दोनों व्यक्तियों की ओर बढ़ रहा था जो पानी के तेज बहाव से जूझ रहे थे। लाभांशु को अपने पास आता देख एक व्यक्ति ने उसे बचने के लिए पकड़ने की कोशिश की लेकिन लाभांशु सावधान हो गया। वह उसकी मुट्ठी में नहीं आया। लाभांशु जानता था कि एक डूबने वाला आदमी दूसरों को भी डुबो देगा। उसने बड़ी चालाकी से उस आदमी के बाल पकड़ लिए और उसे किनारे तक घसीटते हुए ले आया। इस बीच अन्य लोग भी किनारे आ गए थे। उन्होंने उसे प्राथमिक उपचार देना शुरू कर दिया। लाभांशु को पता था कि एक और व्यक्ति अभी भी डूब रहा है। वह फिर से पानी में कूद गया और नदी की धारा में दूर-दूर तक देखा। दूसरा व्यक्ति बहुत दूर चला गया था। अचानक उसने उसका सिर और हाथ देखा, वह उसकी ओर बढ़ गया। पानी पीने के कारण वह बेहोश हो गया था। उसने उसे भी खींच लिया और किनारे पर ले आया। उल्टा सुलाकर उसके पेट से पानी निकाल दिया। इस तरह दोनों की जान बच गई। ऋषिकेश में जैसे-जैसे यह बात फैली, सभी लाभांशु की बहादुरी की प्रशंसा करने लगे। ऋषिकेश बाजार में लाभांशु की ओर हर कोई देख रहा था। इसकी जानकारी मिलते ही लाभांशु को देहरादून में प्रदेश के मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया और उनका नाम 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' के लिए भेजा गया। 24 जनवरी 2015 को लाभांशु को प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति एवं दिल्ली के उपराज्यपाल जैसे विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी में राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नैतिक शिक्षा : डूबते को बचाने वाला किसी भी संकट में डूब नहीं सकता, बस अपने विश्वास का बल सबल चाहिए।

14. निशा में प्रकाशित दीपक

छोटे बच्चे को बचाने के लिए निशा ने लगाई आग में छलांग

महाराष्ट्र का एक छोटा सा गांव। कस्तूरीबाई का एक बेटा और एक बेटी थे। बेटे को इसी साल स्कूल में पढ़ने के लिए रखा गया था। बेटी मुश्किल से छह महीने की थी। ''निशा, नानकी घर में है ,अगर वो जग जाए तो आप देख लेंगे?'' कस्तूरी पडोस की बच्ची निशा का कहकर बहार गइ। 'ठीक है आंटी।' निशा ने कहा; हालांकि, उनका ध्यान खेलने पर था। 14 जनवरी 2016 का दिन था। खेलते हुए निशा की नजर अचानक कस्तूरीबाई के घर की तरफ पड़ी। घर की खिड़की से धुआं निकल रहा था। निशा ने इधर उधर देखा तो कोई आदमी नहीं दिखा। वह कस्तूरीबाई के घर गई और उसने छोटी लड़की को रोते हुए देखा। उसने दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन कस्तूरीबाई दरवाजे के ऊपर चेन लगा कर गई थी, इसलिए निशा वहां नहीं पहुंच सकी। उसने चाल चली। आंगन में चारपाई को दरवाजे तक ले गई और खड़ा कर दीया और चेन खोल दी। दरवाजा खोला तो देखा कि आग की लपटें घर के चारों तरफ फैली हुई हैं। आग घर के केंद्र तक पहुंच गई थी जहां पालना लकड़ी की सिलवटों से बंधा हुआ था। आग की लपटें भी इसकी ओर आ रही थीं लेकिन बिना कुछ सोचे समझे निशा आग की लपटों के बीच कूद गई, छोटी बच्ची को बचाने के लिए। जैसे ही वह छोटी बच्ची के पालने के पास पहुंची, जलती हुई लकड़ी बीच में गिर गई। उसे लगा कि अब जीवित रहना मुश्किल है। उसके चारों ओर आग की लपटें जल रही थीं, लेकिन वह हिम्मत न छोड़कर लड़की के पालने की ओर चल दी और कपड़े में लिपटी रोती हुई बच्ची को उठा लिया। निशा जब बाहर आई तो उसने कस्तूरीबाई को मदद के लिए रोते हुए देखा। उसकी आवाज सुनकर दूर-दूर तक रहने वाले लोग भी भाग के आ गए थे। कुछ पानी का छिड़काव कर रहे थे, जबकि अन्य धूल से आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे। निशा के समय की पाबंदी ने छह महीने की बच्ची की जान बचाई। दिलीप पाटिल को अपनी बेटी निशा पर बहुत गर्व हुआ। पूरे गांव में निशा की बहादुरी, समय की पाबंदी और साहस की प्रशंसा होने लगी। गांव के सरपंच व नेताओं द्वारा निशा को सम्मानित किया गया। कस्तूरीबाई उसे आशीर्वाद देते हुए थकती नहीं थीं। कस्तूरीबाई को ऐसा लगा जैसे निशा ने उसकी छोटी बेटी को नई जिंदगी दे दी हो। पास के एक शहर से आने वाले एक अखबार में भी इस बात का उल्लेख किया गया था। निशा दिलीपभाई पाटिल का नाम बाल कल्याण परिषद महाराष्ट्र ने राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए भेजा था। निशा दिल्ली गई। 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' 24जनवरी 2017 को दिल्ली में देश के प्रधानमंत्री के हाथों प्रदान किया गया।

नैतिक शिक्षा : आपदा ना आए तब तक ही भयभीत रहना चाहीए, पर यदि आपदा आ ही जाए, तो निडर होकर उससे दो-दो हाथ कर लेने चाहिए।

"प्रधानमंत्री द्वारा ई.स.2023 में पुरस्कृत-जन"

26 जनवरी 2023 को जो 11 पुरस्कार
राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के द्वारा दिए गए है, उनका यहाँ वर्णन किया गया है।

15. आदित्य सुरेश

आदित्य सुरेश एक 16 वर्षीय लड़का है जो केरल के कोल्लम जिले का रहने वाला है। आदित्य को एक दुर्लभ बीमारी है। जरा सा भी तनाव हो तो उसकी हड्डियां टूट जाती हैं। उन्होंने 4 साल की उम्र में संगीत विकसित किया।

आज, वह एक अद्‌भुत गायक हैं और उन्होंने 600 से अधिक संगीत समारोह किए हैं।

देश को आदित्य और उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति पर गर्व है। बीमारी के बावजूद उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी। उन्होंने सभी संघर्षों को पार किया 2023 को गणतंत्र दिवस पर नवाचार के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त किया।

16. आदित्य प्रताप सिंह चौहान

प्लास्टिक से प्रकृति को हो रही परेशानियों से हम सभी अवगत हैं। जब दुनिया प्लास्टिक के विकल्प खोजने के लिए संघर्ष कर रही है, छत्तीसगढ़ के एक 17 वर्षीय लड़के आदित्य प्रताप सिंह चौहान ने "माइक्रोपा" नामक एक उपकरण विकसित किया है जो पानी में माइक्रोप्लास्टिक का पता लगाता है। माइक्रोप्लास्टिक प्लास्टिक के छोटे कण होते हैं। आदित्य का नवाचार लागत प्रभावी है और यह पानी से माइक्रोप्लास्टिक्स को हटाने में हमारी मदद करेगा। आदित्य चौहान ने 26 जनवरी 2023 को नवाचार के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त किया।

17. रोहन रामचंद्र बहिर

यह कहानी रोहन रामचंद्र बहिर नाम के एक 15 वर्षीय लड़के के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसने बड़ी बहादुरी और निडरता का प्रदर्शन किया। राजौरी शहर में डोमरी नदी के किनारे एक महिला कपड़े धोने आई थी। अचानक वह नदी में गिर गई और डूबने लगी। रोहन ने तुरंत ही यह देख लिया। विचार किए बिना, उसने अपनी जान जोखिम में डालकर नदी में छलांग लगा दी और सौभाग्य से 43 वर्षीय महिला को डूबने से बचा लिया। उनकी बहादुरी के कार्य की प्रधान मंत्री द्वारा बहुत सराहना की गई और उन्हें 26 जनवरी 2023 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रधान मंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वह न केवल बहादुर है, बल्कि एक बहुत ही दयालु और उदार इंसान भी है। उन्होंने अपनी प्राप्त एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि, गणेश चतुर्थी समारोह के लिए अपने गांव को दान की है। कहावत है, बहादुर वह नहीं है जो डरता नहीं है, बल्कि वह है जो उस डर पर विजय प्राप्त करता है।

नैतिक शिक्षा : रोहन की कहानी हमें हमेशा किसी जरूरतमंद की मदद करने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही, यह हमें अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकलने और वह हासिल करने की समझ देता है, जिससे हम डरते हैं।

"प्रधानमंत्री द्वारा ई.स.2023 में पुरस्कृत-जन"

26 जनवरी 2023 को जो 11 पुरस्कार
राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के द्वारा दिए गए है, उनका यहाँ वर्णन किया गया है।

18. अनुष्का जोली

अनुष्का ने "कवच" नाम से एक दादागिरी विरोधक ऐप विकसित किया है जो बच्चों/अभिभावकों को डराने-धमकाने की घटनाओं की गुमनाम रूप से शिकायत करने में सक्षम बनाता है, जिसमें विद्यालय प्रबंधनों को उन तक पहुंचने का प्रावधान है। यह एप्लिकेशन देश भर के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में डराने-धमकाने की इस समस्या को दूर करने के लिए बहुत सारे छात्रों के लिए बहुत मददगार रहा है। अनुष्का ने गुरुग्राम में एक दादागिरी विरोधक दास्ता भी शुरू किया जो युवा और बुजुर्गों को खुद के लिए और दूसरों के लिए खड़े होने में सशक्त बनाकर इस मुद्दे के बारे में जागरूकता फैला रहा।

19. हनाया निसार

जम्मू-कश्मीर की रहनेवाली हनाया निसार अनंतनाग जिले की सरकारी मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 11वीं कक्षा में पढ़ती है। उसने बहुत ही कम उम्र में दक्षिण कोरिया में आयोजित तीसरी विश्व सक्वे प्रतियोगिता में देश के लिए स्वर्ण पदक जीता है। इसके साथ ही, उसने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर कई पदक हासिल किए हैं। अपनी सुरक्षा के लिए आत्मरक्षा सीखने की सलाह देती हैं। हनाया ने इतनी कम उम्र में इतना कुछ हासिल कर भारत को गौरवान्वित किया है।

20. कोलागाटला अलाना मीनाक्षी

कोलागाटला अलाना मीनाक्षी एक 11 वर्षीय लड़की है जो आंध्र प्रदेश के विजाग शहर से ताल्लुक रखती है। मीनाक्षी ने ऑनलाइन एशिया नेशंस कप अंडर-14 गर्ल्स टीम चेस चैम्पियनशिप 2022 में भारत का प्रतिनिधित्व किया और इंटरनेशनल चेस फेडरेशन की अंडर-10 कैटेगरी में वर्ल्ड नंबर 2 का स्थान हासिल किया। पेशेवर शतरंज खिलाड़ी बनने के लिए कड़ी मेहनत, प्रतिभा और गंभीरता बहुत जरूरी है।

21. गौरवी रेड्डी

गौरवी रेड्डी तेलंगाना की रहनेवाली है, जिसे बचपन में नृत्य करने का बहुत शौक था। उसने शास्त्रीय नृत्य सीखा और नृत्य के इस रूप में एक विशेषज्ञ बन गई। शास्त्रीय नृत्य आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने और आत्मविश्वास विकसित करने का एक बेहतरीन तरीका है। शास्त्रीय नृत्य बच्चों को भारत की समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत का मूल्य सिखाता है। वह 2016 में मात्र 16 साल की उम्र में अंतराष्ट्रीय नृत्य परिषद के लिए सबसे कम उम्र की नामांकित व्यक्ति थीं। उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने के लिए गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रीय बाल पुरस्कार मिला।

ANOUSHKA JOLLY
A 13 year old girl
Founder of
Anti-Bullying Squad
"Fight Against Bullying"
Youngest Entrepreneur featured & raised funding on SHARK TANK INDIA

Pradhan Mantri Rashtriya Bal Puraskar 2023
HANAYA NISAR
Age : 16 | Jammu & Kashmir
Field : Sports

ALANA MEENAKSHI KOLAGATLA

M GAURAVI REDDY

"प्रधानमंत्री द्वारा ई.स.2023 में पुरस्कृत-जन"

26 जनवरी 2023 को जो 11 पुरस्कार
राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के द्वारा दिए गए है, उनका यहाँ वर्णन किया गया है।

22. सांभब मिश्रा

सांभब हमेशा से एक जिज्ञासु बालक था। उन्हें हमेशा कुछ नया जानने या सीखने की इच्छा रहती थी। उन्होंने वाशिंग मशीन का सबसे छोटा डाई वर्किंग मॉडल बनाया और उन्हें 'द इंडियन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' से सम्मानित किया गया। उन्हें लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की फैलोशिप से भी सम्मानित किया गया जो दक्षिण एशियाई मानविकी में सर्वोच्च सम्मान है। सांभब ने 3 किताबें लिखी हैं। उन्हें दीन दयाल स्पर्श योजना छात्रवृत्ति कार्यक्रम के लिए भी चुना गया है। इस साल उन्हें राष्ट्रीय बाल पुरस्कार भी मिला।

23. ऋषि शिव प्रसन्ना

ऋषि एक 8 वर्षीय युवा प्रतिभाशाली लड़का है जिसे प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार मिला है। वह मेन्स इंटरनेशनल के सबसे कम उम्र के सदस्य हैं जो उच्च बुद्धि वाले लोगों का सबसे प्रतिष्ठित समाज है। उन्होंने 5 साल की उम्र में कोडिंग सीखी और 3 एन्ड्रोईड एप्लिकेशन विकसित किए। उनमें बच्चों के लिए I.Q. टेस्ट ऐप, दुनिया के देश और CHB शामिल हैं। वह सबसे कम उम्र के यू-ट्यूबर्स हैं और वे विज्ञान से संबंधित विषयों पर ज्ञान साझा करते हैं। तीन साल की उम्र में, उन्होंने सौर मंडल, ग्रह, और ब्रह्मांड के बारे में बात की। ऋषि को 180 के I.Q. के लिए जाना जाता है, जो सामान्य लोगों की तुलना में बहुत अधिक है।

ऋषि बड़े होकर वैज्ञानिक बनना चाहते हैं और समाज और देश के लिए योगदान देना चाहते हैं।

24. शौर्यजीत

शौर्यजीत एक 10 वर्षीय, बेहद प्रतिभाशाली मल्लखंभ खिलाड़ी है, जिसे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस खेल में, एक जिम्नास्ट ऊर्ध्वाधर स्थिर या लटकते लकड़ी के खंभे, बेंत या रस्सी पर हवाई योगासन और कुश्ती पकड़ करता है। वह 2022 में गुजरात में आयोजित 36वें राष्ट्रीय खेलों में सबसे कम उम्र के पदक विजेता बने।

25. श्रेया भट्टाचार्जी

श्रेया भट्टाचार्जी ने कला और संस्कृति के क्षेत्र में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार जीता। वह 12 साल की है और आसाम की रहने वाली है। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे लंबे समय तक तबला बजाने का रिकॉर्ड रखती हैं। वह विभिन्न पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं, ऑल-नॉर्थ-ईस्ट तबला एकल प्रतियोगिता, अखिल भारतीय पं. रूपक कुलकर्णी संगीत प्रतियोगिता और अखिल भारतीय तबला एकल प्रतियोगिता की विजेयता उन्होंने प्रदर्शन कला के 9वें सांस्कृतिक ओलंपियाड में भी स्वर्ण पदक जीता।

श्रेया के माता-पिता भी तबला बजाते और गाते हैं। इसलिए, उसने धीरे-धीरे इस क्षेत्र में रुचि विकसित करना शुरू कर दिया। उसने 3 साल की उम्र में तबला खेलना शुरू किया, जब उसके पिता उसके गुरु थे। स्कूल में उनके संगीत शिक्षकों ने बहुत प्रोत्साहित किया है। प्रधानमंत्री और भारत के राष्ट्रपति से मिलना श्रेया का सपना था। पुरस्कार पाकर वह बहुत खुश हैं।

26. कुत्ते का बलिदान "वाघ्या"

(वाघ)

छत्रपति शिवाजी महाराज के पास एक कुत्ता था। उसका नाम वाघ्या था। वह शिवाजी महाराज के प्रति बेहद वफादार और विश्वासु था, शिवाजी महाराज के महल में हाजर रहते हुए एक बार भी एसा नही हुआ कि महाराज के खाये बिना वाघ्या ने खाया हो। कई बार शिवाजी इसे युद्ध में अपने साथ ले जाते थे। दोनों एक-दूसरें से बेहद प्यार करते थे । कई युद्धो में वाघ्या ने वीरतापूर्वक प्रदर्शन किया।

वाघ्या मतलब वफादारी और प्रेम की मूरत। सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा था। इतने में एक दिन शिवाजी बिमार पड़ गए और वह बिस्तर से उठ भी नहीं पा रहे थे। वाघ्या उदास हो गया। शिवाजी महाराज तेज बुखार से पीडित थे। वह कुछ खा नहीं रहे थे। इसलिए वाघ्या ने भी खाना पीना बंध कर दिया।

दिन बीतते जा रहे थे। दस दिन हो गए। कई वैद्य और हकीम आ गए लेकीन कोई भी शिवाजी को ठीक नहीं कर पाया। बुखार कम नही हो रहा था। उन्होंने खाना-पीना बंध कर दिया था उनके साथ-साथ वाघ्या ने भी खाना-पीना छोड दिया था। वह दस दिन शिवाजी के बिस्तर के पास ही बैठा रहा और एक भी दाना मूँह में नहीं लिया। शिवाजी के मंत्री, मित्रो और कई लोगोंने वाघ्या को समझाया लेकिन उसने कुछ नहीं खाया।

सारे नगर में वाघ्या की चर्चा होने लगी। इतना वफादार कुत्ता पहले कभी किसीने नहीं देखा था। लेकिन लोगों को क्या पता वफादारी की पराकाष्ठा अभी बाकी है।

शिवाजी महाराज जितने दिन भूखे रहे उतने दिनों तक वाघ्या ने भी भोजन नहीं किया। वह भी भूखा रहा और बस रोते गया।

अंततः शिवाजी का स्वर्गवास हुआ। सारे नगर में हाहाकार मच गया। उनकी शवयात्रा निकाली गई। यात्रा में हजारों लोग शामिल हुए। महा योद्धा को अश्रु भरी बिदाई दी गई। लोगों की आँखो से आँसू रुक नहीं रहे थे।

वाघ्या की हालत सबसे खराब थी। वह भी रो-रो कर बेहोश हो गया था।

शिवाजी के पार्थिव देह को श्मशान घाट में लाया गया। वाघ्या शिवाजी को गले लगाने के लिए तड़प रहा था। कोई भी उसे नियंत्रित करने में सक्षम नहीं था। सैनिकों ने उसको मुश्किल से पकड कर रखा और शिवाजी के शरीर को अग्निदाह दिया गया।

भीड़ में से एक कराह उठी, सिपाही भी रो पड़े। जिस सैनिक के हाथ में वाघ्या था उन्होंने थोडी देर के लिए वाघ्या को नीचे छोडा। बस इतनी ही देर... जैसे वाघ्या को नीचे रखा और तुरंत वह चिता की और दौड पड़ा। लोग इसके बारे में कुछ सोचे इससे पहले ही वह शिवाजी महाराज की उग्र चिता में कुद पड़ा।

शिवाजी के शरीर के साथ वह भी जल गया। उपस्थित लोग आश्चर्य चकित हो गए। भीड में सभी कराह कर दुखी थे। एक कुत्ते का अपने मालिक के प्रति इतना प्यार, इतनी वफादारी देख कर लोग आश्चर्यचकित हो गए।

"कुत्ते जितना वफादार कोई नहीं होता" यह किस्सा इस बात का पर्याप्त प्रमाण है। आज भी रायगढ़ के किले की टोच पर शिल्प बने है।

रायगढ़ में शिवाजी की समाधि के बगल में वाघ्या की भी समाधि बनाई गई है। उसके उपर वाघ्या की मूर्ति स्थापित की गई है। वह समाधि केवल समाधि नहीं बल्कि वफादारी और निष्ठा का जीवंत प्रतीक है। यह कुत्तो की वफादारी का प्रमाण है।

कुत्तो की वफादारी दुनिया की सबसे अच्छी वफादारी है। यह द्रष्टांत खुद ही बडी नैतिक शिक्षा है।

27. आचार्य श्री लब्धिसूरीश्वरजी म.सा.

आचार्य श्री लब्धिसूरीश्वरजी को सभी जीवित प्राणियों के उत्थान के लिए जैन धर्म की शक्तियों में बहुत विश्वास था। बाद के वर्षो में वह इस संदेश को सागर पार पहुंचाना चाहते थे।

उनका जन्म गुजरात के साबरकांठा जिल्ले के बालशासन नाम के गाँव में (वि.सं. 1940, ई.स. 1882) में लालचंद के रुप में हुआ था।

इस गाँव में कोई स्कूल नहीं थी। इसलिए उनके पिता उन्हें अक्षर और अंक सिखाते। उनकी आगे की शिक्षा माणसा में अपनी भुआ के साथ रहते हुए हुई। वहाँ वह आचार्य श्री कमलसूरीश्वरजी और उद्योत विजयजी के संपर्क में आए और उन्होनें संसार को त्यागने और एक उच्च और आनंदमय जीवन जीने का फैसला किया। इसके लिए दो बार घर से भागने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। वि.सं. 1959 में वह रात को घर से निकले और बोरु पहुँचे। उन्हें कमल सूरीश्वरजी ने मुनि लब्धि विजयजी के रुप में दीक्षित किया।

आवश्यक अध्ययन पूर्ण करने के बाद उन्होंने व्याकरण के साथ-साथ न्याय दर्शन का भी अध्ययन किया। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी और गुजराती में कविताएँ लिखना शुरु किया। उन्होंने लगभग एक दर्जन भाषाओं में महारत हासिल की। वि.सं. 1964 में आचार्य श्री कमलसूरीश्वरजी के आदेश का पालन करते हुए उन्होंने पंजाब का दौरा किया। 1964 और 1965 में नारोवल में मूर्तिपूजा के समर्थन में समाजियों से हुए वाद-विवाद में विजय प्राप्त की। उन्हों ने उर्दू में 'मूर्ति-मण्डन' नामक पुस्तक लिखी, जिसे पढ़कर आचार्यश्री कैलाशसागरसूरिजी कट्टर मूर्तिपूजक बन गये। वह दर्शनशास्त्र के सभी विद्यालयों में पारंगत थे। उन्हों ने मुल्तान में आधी रात को व्याख्यान दिया जिसके परिणामस्वरुप 500 लोगों ने मांस से दूर रहने की कसम खाई। जब कसाई मुनियों पर हमला करने आए तो वहाँ के लोगों ने उन्हें शांत किया और वे शांतिपूर्वक वापस चले गए।

उन्होंने ई. 1913 (वि.सं. 1969) में अंबाला में पंजाब-हिंद सम्मेलन के 5वें सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया। सभापति श्री केदारनाथ की उपस्थिति में 'दया' पर 45 मिनट की प्रस्तुति में श्रोता उनकी वक्तृत्व कला से मंत्रमुग्ध हो गए। सभापतिने श्री लब्धिविजयजी को सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया। श्री लब्धिविजयजी का व्याख्यान रुकवाने के लिए श्री लाला लजपतराय द्वारा सभापति को तीन चिठ्ठी भी भेजी गई, परंतु उन्हों ने कूडेदान में फेंक दी।

अपनी दिल्ली यात्रा के दौरान वि.सं. 1970 में उन्होंने उल्लेखनीय सफलता के साथ रामा थिएटर में व्याख्यान दिया। परिणाम स्वरुप बहुत से लोगो ने (मांसाहार त्याग दिया) और कट्टर शाकाहारी बन गए।

फिर उन्हें वि.सं. 1971 में इडर संघ द्वारा जैन रत्न और व्याख्यान वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया गया।

वि.सं. 1973 में खंभात में एक आर्य समाजी श्री आनंद कृष्ण के साथ चार घंटे तक संस्कृत में शास्त्रार्थ हुआ जो श्री आनंदकृष्ण के तर्को के पूर्ण खंडन के साथ समाप्त हुआ। एक वैदिक विद्वान स्वामी मुकुंद आश्रम के साथ एक वाद जो तीन दिनों के लिए आयोजित था। उन सबने भी अपनी हार स्वीकार कर ली लेकिन मुनिश्री को अपने विरोधियों की हार पर खुशी नहीं हुई। इसके विपरीत उन्होंने यह कहकर उन्हे सांत्वना देने की कोशिश की कि यदि अनेकांत वाद के आधार पर व्याख्या की जाए तो वेदों में भी अहिंसा का संदेश है। इससे मुनि श्री की उदारता एवं अनेकांत वाद की श्रेष्ठता का पता चलता है।

वि.सं. 1979 में उन्होंने बाल दीक्षा देने का समर्थन किया। वि.सं. 1981 में उनके गुरुदेव और छाणी संघ द्वारा उन्हे 'आचार्य' की पदवी से सम्मानित किया गया। उन्हों ने चार खंडो में 'द्वादशार नयचक्र' का संपादन किया जिसका उद्घाटन भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने मुंबई में वि.सं. 2016 ई.स. 1960 में किया था।

अंततः वि.सं. 2017, 17 अगस्त 1961 मुंबई में समाधिपूर्वक उनका कालधर्म (निधन) हो गया।
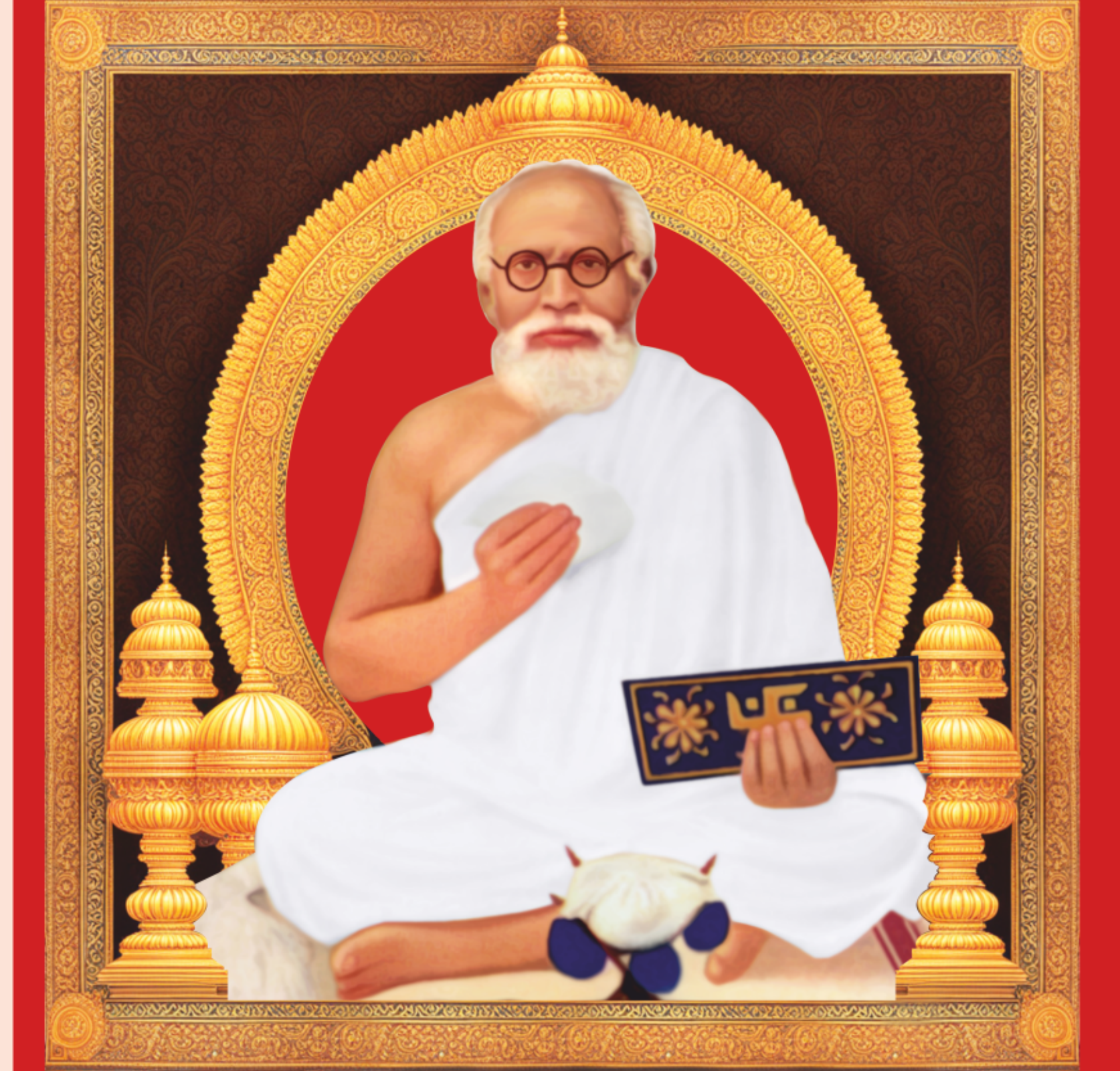
28. श्री कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य महाराज

करीब 900 साल पुरानी बात है।

अहमदाबाद-पालीताणा रोड पर बसा आज का धंधुका नामक गाँव उस समय का बड़ा नगर था। वहाँ बहुत सारी संपत्ति और समृद्धि के साथ चाच-पाहिनी सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे। जीवन सुखपूर्ण होने के बावजूद उन्हें एक बात का दुःख था, पुत्र न होने का।

रात के समय जब शेठानी पाहिनी मीठी नींद में थीं, तब वे एक स्वप्न देखती हैं कि वे एक शुभ सुंदर चिंतामणी रत्न प्राप्त करती हैं और उसे गुरुदेव को सोंपती हैं।

स्वप्न की बात पति चाच को सुनाती हैं। चाच कहते हैं : 'तुम्हे एक पुत्ररत्न प्राप्त होगा।'

जब सुबह होती है, तब सेठ-सेठानी जिनालय में प्रभु के दर्शन करने के पश्चात् उपाश्रय जाते हैं। उस समय उपाश्रय में प.पू. आचार्यश्री देवचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज बिराजमान है। सेठानी पाहिनी आचार्यदेव को पूरा स्वप्न कह सुनाती है।

पू. देवचन्द्रसूरि महाराज कहते है : "पाहिनी ! तुम्हारी कूख से श्रेष्ठ रत्न जैसा एक पुत्र जन्म लेगा और उस रत्न को गुरुदेव को अर्पण करने का अर्थ यह है कि वह पुत्र दीक्षा लेकर, बड़ा होकर जिनशासन का सूरिसम्राट बनेगा।"

वि.सं. 1145 - ई.स. 1089 के कारतक सुद-15 के दिन सेठानी पाहिनी 'माता पाहिनी' बनती है। शुभ मुहूर्त में वे रत्न से भी अधिक तेजस्वी पुत्ररत्न को जन्म देती है, तभी आकाशवाणी होती है : 'यह बालक भविष्य में जिनेश्वर सर्वज्ञ परमात्मा की तरह सूरिसम्राट बनेगा।'

पुत्र का नाम रखते है चांगदेव।

माता पाहिनी बालक चांगदेव को साथ लेकर मंदिर आती हैं। बालक चांगदेव जाकर देवचन्द्रसूरि महाराज के आसन पर बैठ जाता है।

देवचन्द्रसूरि महाराज कहते हैं, "यह पुत्र रत्न तुम्हे गुरुदेव को सौंपना है।"

माता पाहिनी कहती है, " पुत्र को सोंपने से पहले सेठ चाच की संमति लेनी भी आवश्यक है।"

देवचन्द्रसूरि महाराज सेठ चाच को समझाकर संमति प्राप्त कर लेते हैं और बालक चांगदेव को अपने साथ लेकर स्तंभन तीर्थ - खंभात की ओर विहार करते हैं।

वि.सं. 1154 - ई.सं. 1098, महा सुद-14 के शुभ दिन नौ वर्ष का चांगदेव गुरुदेवश्री देवचन्द्रसूरि महाराज के द्वारा रजोहरण प्राप्त कर नाच उठता है। श्रेष्ठी पुत्र चांगदेव अब बनता है : 'बालमुनि सोमचन्द्र'

कुछ ही समय में गुरुदेव के पास जितना ज्ञान था, वह सभी बालमुनि प्राप्त कर लेते हैं...

एक बार बालमुनि सोमचन्द्र सरस्वती की साधना करने... गिरनार तीर्थ पहुँचते है। वहाँ रात्रि के समय पर बालमुनि सरस्वती का ध्यान-जाप करने बेठते हैं और चमत्कार होता है। जाप करने बैठे बालमुनि के समक्ष सरस्वती देवी स्वयं प्रगट होती है !

"आपकी भक्ति और प्रणिधान से प्रसन्न होकर मैं स्वयं दर्शन देने आयी हूँ। मैं आपको वरदान देती हूँ। आप 'सिद्धसारस्वत' हो।" वरदान देकर सरस्वती देवी अन्तर्धान हो जाती हैं।

रात्रि का शेष समय नए-नए स्तोत्रों के द्वारा सरस्वती की स्तवना कर बिताते है।

उनकी तीव्र बुद्धि, सुविशुद्ध संयम, विनय, शासन प्रभावना की शक्ति आदि गुणो को देखकर गुरुदेवश्री देवचन्द्रसूरि महाराज गणि सोमचन्द्र विजय को 'आचार्यपद' देने का निश्चित करते हैं।

वि.सं. 1166, ई.स. 1110, वैशाख सुद-3 के मंगल दिन चतुर्विध संघ के समक्ष गुरुदेवश्री देवचन्द्रसूरि महाराज स्वयं सूरिमंत्रो का श्रवण करवाकर आचार्य की पदवी प्रदान करते है उनकी उम्र : सिर्फ 21 वर्ष की होती है! नया नाम प्रसिद्ध होता है : 'आचार्यश्री हेमचन्द्रसूरि महाराज'

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्यदेवश्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा की प्रसिद्धि चारों और फेल रही है। वे 18 देश के राजा कुमारपाल को प्रतिबोध देकर दृढ जैनधर्मी बनाते है।

राजा कुमारपाल को जैनधर्म का अनुयायी देखकर पंडित देवबोधि नामक एक मांत्रिक राजा के पूर्वजों के एवं दुसरे चमत्कार दिखाना शुरू करता है।

राजा कुमारपाल बहुत ही असमंजस में आ जाते है, तभी मंत्री उदयन कहते है : 'राजन् ! कलिकाल सर्वज्ञश्री भी सभी ज्ञान-विज्ञान-मंत्र-विद्या में चतुर है। उनसे भी पूछना चाहिए की सत्य क्या है?'

दूसरे दिन सुबह देवबोधि आदि के साथ राजा कुमारपाल उपाश्रय जाते हैं। कलिकाल सर्वज्ञश्री बिराजमान होते हैं, तभी एक के बाद एक सभी पाट को हटा लिया जाता है और हवा में उपर रहकर कलिकाल सर्वज्ञश्री व्याख्यान फरमाते हैं। सभी विस्मित हो जाते हैं।

उसके बाद कलिकाल सर्वज्ञश्री राजा कुमारपाल को एक कमरे में ले जाते हैं और राजा को अपने पूर्वजों को 24 तीर्थंकरों की पूजा करते दिखाते हैं। पूर्वज कहते हैं : 'कुमारपाल ! जैनधर्म ही सत्य है। तुम जैनधर्म की आराधना करते हो, उसके प्रभाव से ही हमने देव की ऋद्धि प्राप्त की है।'

सोच में डूबे राजा को कलिकाल सर्वज्ञश्री कहते है : 'राजन्! मैंने और देवबोधि दोनों ने तुम्हारे पूर्वजों को दिखाया, वह तो सिर्फ मायाजाल है - झूठ है, सत्य है एकमात्र जैनधर्म!'

कलिकाल सर्वज्ञश्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज एक बार अपनी देशना में फरमाते है : 'विवेकी श्रावक को बारिश के चार महीनों में अपने घर से निकलकर कहीं भी जाना सही नहीं है, क्योंकि बारिश के चलते रास्ते के उपर बहुत-से छोटे-बड़े जीव उत्पन्न होते हैं। तब बाहर निकलने से उन जीवों की विराधना होती है - उनकी मृत्यु भी होती है...'

यह सुनकर राजा कुमारपाल नियम लेते है : ''बारिश के मौसम में जिनालयों में दर्शन करने और उपाश्रय में गुरुदेव के वंदन करने के अलावा किसी भी कार्य के लिए मैं अपने घर-राजमहल से बाहर नहीं निकलूंगा।''

इस नियम के समाचार शक देश के राजा को मिलते हैं। वह बादशाह सैन्य लेकर गुजरात पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करता है।

गुप्तचर जब यह समाचार राजा कुमारपाल को देते हैं, तब राजा चिंतित हो जाते हैं।

'गुरुदेव ! क्या करूँ ? दोनों ओर से फँस गया हूँ। एक ओर महल से बाहर न निकलने का नियम है और दूसरी ओर यह युद्ध की नौबत आ पड़ी है। नियम तोडना भी नहीं है और युद्ध को हारना भी नहीं है...' राजा अपनी चिंता गुरुदेव को बताते हैं।

कलिकाल सर्वज्ञश्री कहते है : 'राजन् ! तुम निश्चिंत हो जाओ। क्योंकि तुम धर्म के पक्ष में हो। यह धर्म ही तुम्हारी रक्षा करेगा।' राजा को यह आश्वासन देकर कलिकाल सर्वज्ञश्री पद्मासन लगाकर ध्यान में बैठ जाते हैं।

एक घंटा भी नहीं हुआ होगा कि तभी आकाश में से एक बिस्तर आता है और बिलकुल कलिकाल सर्वज्ञश्री के सामने समायोजित हो जाता है ! उसमें एक आदमी भी सो रहा है।

राजा एकदम चकित होकर पूछता कौन है : 'गुरुदेव ! यह बिस्तर कहाँ से आया और यह आदमी हौन है?'

कलिकाल सर्वज्ञश्री कहते हैं : 'कुमारपाल ! यह शक देश का बादशाह है, जो तुम पर चढ़ाई करने आ रहा था, वही है यह आदमी।'

इतने में वह बादशाह नींद से उठता है। चारों ओर देखने लगता है कि स्वयं कहाँ आ गया है?

'बादशाह ! देख क्या रहा है? अरे ! जो इन्सान अपने धर्म की रक्षा करता है, उसे तो दिशाएं भी सहाय करती है। धर्म के रक्षक कुमारपाल ने ही तुझे उठाकर यहाँ हाजिर कर दिया है। जीवित जाना हो, तो कुमारपाल की शरण में जाना ही सही है।'

राजा कुमारपाल कहते हैं : 'यदि तुम अपने देश में वर्ष के छह महीने 'अमारी प्रवर्तन' (किसी भी जीव की हिंसा न करनी, न करानी) का पालन करओंगे, तभी तुम्हें जीवित छोडुंगा।'

बादशाह शर्त को मानता है। राजा कुमारपाल के साथ दोस्ती का सोगंधनामा करता है। राजा कुमारपाल भी उसे अपने महल ले जाते है और सत्कार-सन्मान कर बादशाह को अपने देश जाने के लिए विदाय देते है।

यहां कुमारपाल की सभा में कलिकाल सर्वज्ञश्री का आदर-सत्कार बहुत ही बढ़ जाता है। कलिकाल सर्वज्ञश्री की तीव्र बुद्धि, तर्कशक्ति, शीघ्र जवाबी, विद्वत्ता के कारण राजा उनकी ओर पूर्णतः आकर्षित होता है।

इसलिए दूसरे पंडितो को कलिकाल सर्वज्ञश्री की ईर्ष्या होती है और किसी भी तरह उनको नीचा दिखाने का षडयंत्र रचते रहते है। किन्तु वे इस में असफल रहते हैं।

कलिकाल सर्वज्ञश्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा बहुत से शास्त्रों का सर्जन भी करते है।

सिद्धहेमशब्दानुशासन : कलिकाल सर्वज्ञश्री ने आचार्यपद के बाद, गुजरात के राजा श्री सिद्धराज जयसिंह को प्रतिबोध किया। उस समय गुजरात के पास अपना भाषा-व्याकरण न था। राजा सिद्धराज की विनंती स्वीकार कर कलिकाल सर्वज्ञश्री सिर्फ एक वर्ष में ही सवा लाख श्लोकप्रमाण संस्कृत व्याकरण की रचना करते हैं। राजा के और अपने नाम के प्रथम दो-दो अक्षरों को मिलाकर उस व्याकरण का नाम रखते हैं 'सिद्ध-हेम-शब्दानुशासन।' आज भी यह गुजरात का एकमात्र व्याकरण है और उसके आधार पर ही गुजराती भाषा का उद्‌भव हुआ है।

त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र, अभिधान चिंतामणी, धातुपारायाण, लिंगानुशासन, एकार्थ और अनेकार्थ कोष, प्रमाण मिमांशा, अलंकार चुडामणी, देशीनाम माला, निघन्टु, योगशास्त्र, वीतरागस्तोत्र जैसे अनेक शास्त्रों का कलिकाल सर्वज्ञ ने सर्जन किया है। कलिकाल सर्वज्ञश्री ने साडेतीन करोड श्लोकप्रमाण ग्रंथो की रचना की है।

इतनी छोटी जिंदगी में साडे तीन करोड श्लोक प्रमाण ग्रन्थ रचना - इतना बड़ा कार्य देव-गुरु-धर्म की एवं माँ सरस्वती की कृपा बिना अशक्य है, 1. दो-दो राजाओ को प्रतिबोध, 2. व्याकरण पारंगत, 3. न्याय पारंगत, 4. मंत्र-तंत्र-योग पारंगत, 5. वाद पारंगत, 6. नूतन शास्त्र रचना कौशल्य, 7. प्राचीन शास्त्रोपरि विवेचन, 8. अलंकार शास्त्र पारंगत, 9. छंदानुशासन पारंगत ऐसे 9-9 कार्य उन्होंने अकेले ही सम्पन्न कर लिये। और भी ना जाने कितने विशीष्ट कार्य उन्होंने अपने जीवन काल में संपादित किए जिसे हम अल्पज्ञ जान ही नहीं सकते।

कलिकाल सर्वज्ञश्री हेमचंद्राचार्य ने जिनशासन की प्रतिभा बढाई। वि.सं. 1229 (1173A-D)में 84 वर्ष की उम्र में उन्हें कालधर्म प्राप्त हुआ। कलिकाल सर्वज्ञश्री की क्षमता को देखकर राजा कुमारपाल ने नूतनशास्त्र रचना को लिखने के लिए 700 लेखकों की सेवाएं दीं।

कलिकाल सर्वज्ञश्री की श्रुतसर्जन की शक्ति को वंदन ! राजा कुमारपाल की श्रुतलेखन की भक्ति को नमन !

संदर्भ : प्रभावक चारित्र

29. आचार्य श्री पादलिप्तसूरिजी म.सा.

आचार्यश्री पादलिप्तसूरिजी का जीवन असामान्य शक्ति के माध्यम से प्राप्त चमत्कारों और कल्पना की प्रबलता से रचित पुस्तकों के दुर्लभ संयोजन का एक शानदार उदाहरण है। उनका जन्म सर्यू और गंगा के तट पर स्थित अयोध्या में हुआ था। उनके पिता फूलचंद्र शहर के एक अमीर व्यापारी थे और उनकी माँ प्रतिमा एक सुंदर और गुणी महिला थी। यह प्रतिमा की तपस्या और पूजा का फल था कि उसने एक पुत्ररत्न प्राप्त किया था। बालक का नाम नागेन्द्र रखा गया क्योंकि उसके जन्म के समय माता को स्वप्न में नाग दिखाई दिया था। बचपन से ही नागेन्द्र का पालन-पोषण एक धार्मिक परिवार में हुआ था। उसके अलावा, वह सौभाग्यशाली थे कि उन्हें नागहस्ति जैसे कुशल गुरु का मार्गदर्शन और संरक्षण मिला और उन्हें मुनि नागेन्द्र के नाम से जाना जाने लगा। एक बार वे भिक्षा (गोचरी) लेने गए थे। उपाश्रय (जैन साधुओं के ठहरने के लिए एक जगह) लौटने पर सामान्य अनुष्ठान करने के बाद उन्होंने अपने गुरु को उनके द्वारा रचित एक श्लोक में बताया कि कैसे एक युवा नवविवाहित सुंदर महिला ने उन्हें भिक्षा दी थी। स्त्री का ऐसा कामुक वर्णन सुनकर गुरु शिष्य पर क्रोधित हुए और बोले, ''तू कामवासना की आग में जल रहा है। तू गिर गया है।'' मुनि नागेन्द्र तेज-तर्रार थे। उन्होंने विनम्रस्वर में गुरु से अनुरोध किया, ''कृपया एक और 'अ' ध्वनि जोडकर मुझे 'पलित' से 'पादलिप्त' बना दें।'' इसका मतलब था, ''कृपया मुझे पादलिपि ज्ञान में जोड़ें ताकि मैं आकाश में उड़ सकूँ और पादलिप्त कहलाऊँ।'' मुनि नागेन्द्र की असामान्य बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर, गुरु ने उन्हें आशीर्वाद दिया, ''तुम पादलिप्त हो !'' तब से मुनि नागेन्द्र ''पादलिप्त'' के नाम से जाने जाते है। अपने पैरों के तल में मरहम लगाने से उडने की चमत्कारी शक्ति के बल पर, वह प्रतिदिन पांच तीर्थो - शत्रुंजय, गिरनार, अष्टापद, सम्मेतशिखर और मथुरा की यात्रा करते थे और उसके बाद ही जल और भोजन ग्रहण करते थे। उन्होंने चार अन्य सिद्ध विद्याएँ भी प्राप्त की थी :- जीवाजीवोत्पत्ति प्राभृत, विद्या प्राभृत, सिद्ध प्राभृत और निमित्त प्राभृत।

एक बार नागार्जुन नाम के एक सिद्ध योगी ने उन्हें कोटि वेधरस से भरा एक बर्तन भेजा, जो लोहे को सोना बना सकता था। आचार्य पादलिप्तसूरि ने कहा, 'इसमें इतना बडा क्या है?' यह सुनकर नागार्जुन क्रोधित हो गए। सब हालाँकि पादलिप्तसूरि ने पेशाब करके लोहे को सोने में बदल दिया। फलस्वरूप नागार्जुन का अभिमान भंग हो गया और वे पादलिप्तसूरि के पास रहने आ गए जिनसे उन्होंने आकाशगामिनी (आकाश में उड़ना) ज्ञान प्राप्त किया। नागार्जुन ने आचार्यश्री से अनुरोध किया वे उनसे कुछ करने के लिए कहें। तत्पश्चात् पादलिप्ताचार्य ने कहा, आप जीवनभर जैनधर्म का पालन करते हुए अपनी आत्मा के हित के लिए प्रयास करते रहें। नागार्जुनने उनकी आज्ञा का पालन किया। उन्होंने श्री शत्रुंजय महातीर्थ के चरणों में ''पादलिप्त पुर'' नामक एक नगर की स्थापना की। वर्तमान में इसे पालीताणा के नाम से जाना जाता है। किसी जैन आचार्य के नाम पर किसी कस्बे का नामकरण होने का यह एक अनुठा उदाहरण है। नागार्जुन ने पहाड़ी पर एक मंदिर का निर्माण किया और उसके अलावा स्वयं आचार्यश्री की कई मूर्तियाँ स्थापित की। आचार्य श्री ने प्राकृत में 'तरंगवती' नामक कथा लिखी, जो न केवल भारत में किंतु विश्व में एक अद्वितीय स्थान पे है। उन्होंने निर्वाणकलिका, प्रश्नपरख, कालज्ञान जैसे एवं ज्योतिष करंडक और वीरस्तुति ग्रंथों की रचना की एवं कुछ टीकाएं भी (विवरण) लिखी।

उन्होंने श्री शत्रुंजय तीर्थ पर 32 दिनों के उपवास किये और एक समाधिपूर्ण-सद्गति प्राप्त की।

संदर्भ : प्रभावक चारित्र
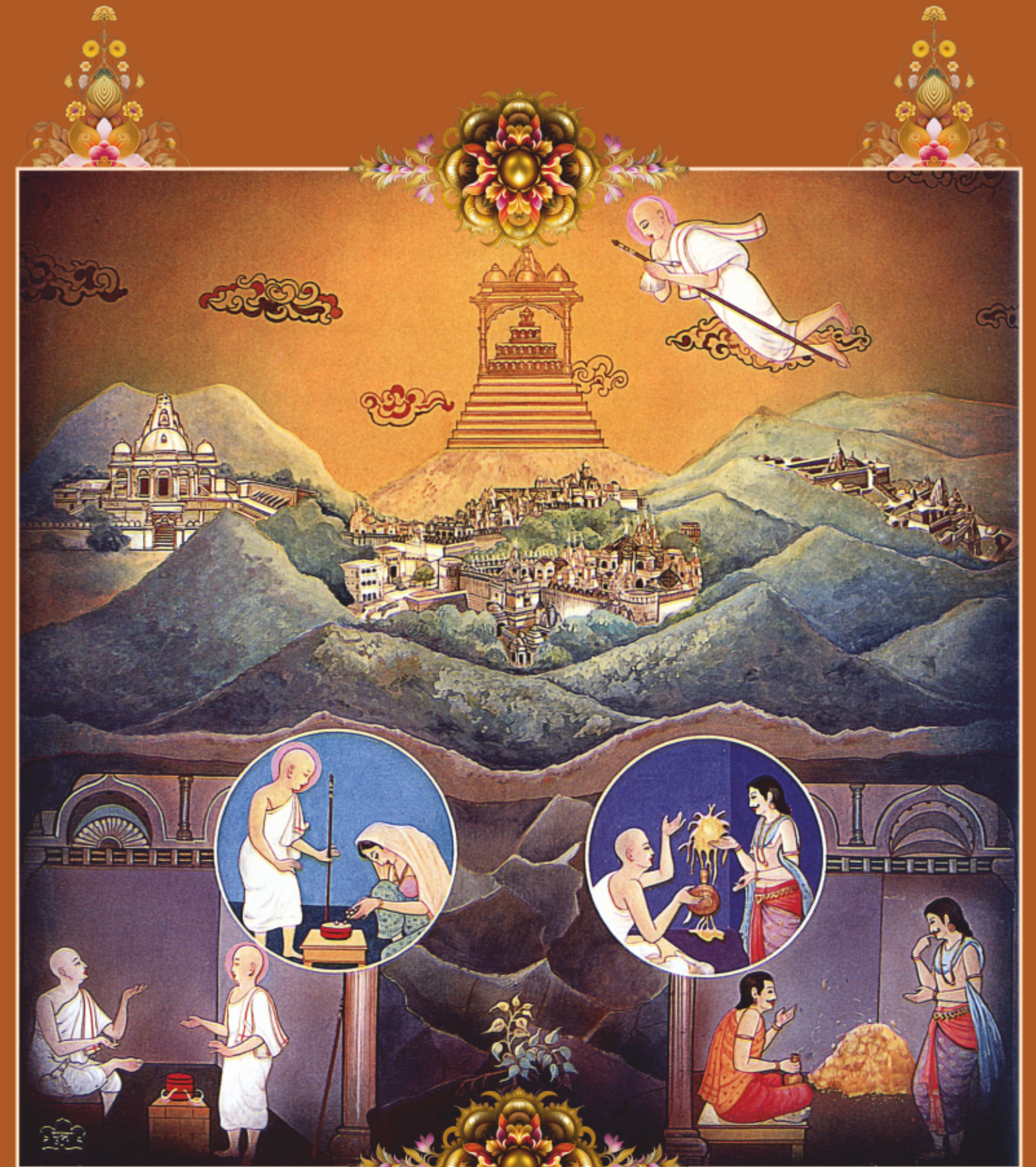
30. आचार्य श्री बप्पभट्टिसूरिजी म.सा.

बप्पभट्टिसूरिजी शास्त्रों की व्याख्या में पारंगत थे। उनका जन्म ई.स. 743 में बनासकांठा के दुवा गाँव में हुआ था। बचपन में उन्हें सुरपाल के नाम से जाना जाता था। एक बार जब आचार्य सिद्धसेनसूरि मोढेरा में ठहरे हुए थे, तो उन्होंने एक युवा शेर को पूजा के स्थान पर छलांग लगाने का सपना देखा। अगली सुबह जब वह जैन मंदिर में गये और एक तेजस्वी और प्रतिष्ठित युवा लडके को देखा, तो उन्हें पिछली रात का सपना याद आया। जल्द ही उन्होंने सुरपाल के पिता बप्पा और माता भट्टी को बुलाया। माता-पिता ने अपने बेटे की प्रतिभा और दृढ संकल्प का सम्मान करते हुए, उनके अनुरोध पर उसे धर्मगुरु को सोंप दिया। उनकी मिली स्मृति के प्रतीक के रूप में, लड़के का नाम बप्पभट्टि रखा गया। अपनी दीक्षा के बाद, लड़के ने तर्क और तर्क की पुस्तकों के साथ साथ 72 कलाओं का भी गहन ज्ञान प्राप्त किया।

कान्यकुब्ज के राजा आम ने बप्पभट्टिसूरि से प्रेरित तथा प्रभावित हुये और पुरस्कार के रूप में राजा अपना आधा राज्य उन्हें भेंट देना चाहते थे। बप्पभट्टिसूरि ने राजा को एक जैन साधु के महाव्रतों से गैर-स्वामित्व की अवधारणा से परिचित कराया। राजा भी बप्पभट्टिसूरि की काव्य-रचना से बेहद प्रभावित थे। हालाँकि, समय-समय पर, राजा ने अधीनता बरती।

बप्पभट्टिसूरि की विद्वता और ब्रह्मचर्य की पुष्टि के लिए एक प्रकार का विशिष्ट परीक्षण किया गया था।

युवा सूरिजी की युवावस्था को ध्यान में रखते हुए, राजा ने उनके ब्रह्मचर्य की परीक्षा लेने के लिए एक युवा वेश्या को पुरुष के रूप में भेजा। वह सो रहे सूरीजी के पास गई और उनकी देखभाल करने लगी। लेकिन जैसे ही बप्पभट्टिसूरिने स्त्री के हाथ का कोमल स्पर्श महसूस किया, वे जाग गए और बहुत चौंक गए। तुरंत ही सूरिजी को राजा की परीक्षा का एहसास हो गया कि वे रात के अंधेरे में एक सुंदर युवती का साथ देकर उन्हें लुभाना चाहते हैं और उन्हें भटकाना चाहते हैं। उन्होने वेश्या को वापस जाने का अनुरोध किया। उसने कामदेव पर विजय प्राप्त किए हुए सूरिजी को प्रणाम किया। राजा आम को अपने आध्यात्मिक गुरु के गरिमापूर्ण व्यवहार के बारे में अजीबो-गरीब प्रक्रिया के दौरान पता चला और वह बहुत खुश हुये।

एक बार, धर्मराज के आह्वान और निमंत्रण पर, राजा आम का प्रतिनिधित्व करनेवाले बप्पभट्टि और राजा धर्मराज का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्वान वर्धनकुंजर के बीच शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। विद्वता की इस लड़ाई में, बप्पभट्टिसूरि विजयी हुए और इस तरह उन्हें वादिकुंजरकेसरी की पदवी से सम्मानित किया गया, लेकिन सूरिजी ने इस जीत को कला की लड़ाई और सद्भाव और संवाद के अवसर में बदल दिया। वर्षों से राजा आम और धर्मराज के बीच गंभीर दुश्मनी थी। सूरिजी ने उन दोनों को क्षमा का महत्त्व समझाया और सुलह करा दी।

बप्पभट्टिसूरि ने मथुरा के तपस्वी वाचस्पति को बहुत प्रभावित किया था।

सूरिजी के उपदेश के प्रभाव से राजा ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में जैन धर्म स्वीकारा।

बप्पभट्टिने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी जिनमें से चतुर्विंशती और सरस्वती स्तोत्र अभी भी उपलब्ध हैं।

उन्होंने असंख्य जैन मंदिर निर्माण के लिए बडे पैमाने पर लोगों को प्रेरित भी किया।

संदर्भ : प्रभावक चारित्र
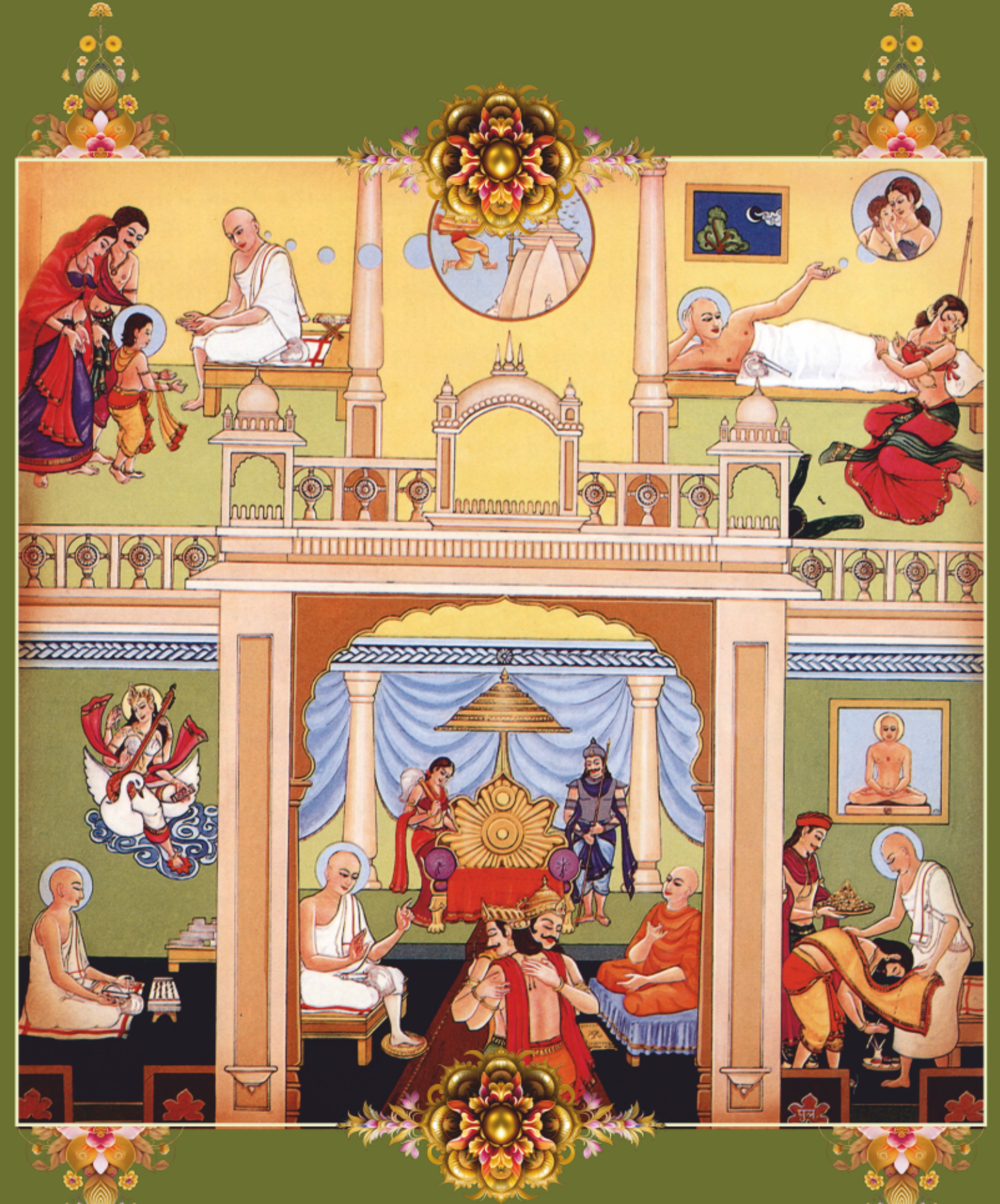
31. आचार्य श्री अभयदेवसूरिजी म.सा.

अभयदेवसूरिजी ने नौ जैन आगमों (जैन विहित साहित्य) पर संस्कृत भाष्य लिखकर अपार ख्याति अर्जित की है। ये भाष्य जैन आगम साहित्य के गहनतम अर्थ की कुंजी हमे प्रदान करते हैं। संक्षिप्त और सुविचारित होने के अलावा ये टीकाएँ कई विषयों को विशद् करती हैं और उन पर चर्चा करती हैं। इस प्रकार उनका नाम उन आचार्यों में सबसे ऊपर है, जिन्होंने जिनागम की शुद्ध परम्परा को अमर करने की दृष्टि से ग्रंथ लिखे हैं।

ऐसा कहा जाता है कि रात को जब आचार्य अभयदेवसूरि ध्यान में लीन थे, शासनदेवी (संरक्षक देवी)ने उनके सामने खुद को प्रकट किया और कहा कि दो आगमों के भाष्य, आचारांग और सूत्रकृतांग, अच्छी तरह से संरक्षित थे, लेकिन अन्य भाष्य लुप्त हो गए और समय के साथ नष्ट हो गये। तब देवी ने उन्हें उस कमी को दूर करने के लिए प्रयास करने के लिए कहा ताकि श्रीसंघ के हित की सेवा की जा सके।

आचार्य अभयदेवसूरिजी ने इस विशाल कार्य को स्वीकार किया। उन्होंने आयम्बिल तप (तपस्या का एक प्रकार) करके भाष्य लेखन की शुरुआत की। लंबे समय तक और श्रमसाध्य प्रयासों के बाद उन्होंने अंग-आगम पर टीकाएं लिखीं। उन्हें त्वचा पर सफेद दाग की बीमारी हो गई थी। उनके विरोधियों ने यह अफवाह फैला दी कि शास्त्रों की गलत व्याख्या करने के कारण माता देवी ने दंड स्वरुप उन्हें रोग का श्राप दिया है। आचार्य अभयदेवसूरिजी ने रात में शासन रक्षक देव धरणेन्द्र का आह्वान किया और जैसे ही देव उनके सामने प्रकट हुए, आचार्य ने कहा, "हे देव ! मैं अपनी मृत्यु से कम डरता हूँ, लेकिन मैं झूठे आरोपों और दुर्भावनापूर्ण आलोचना को सहन नहीं कर सकता। जो लोग बदनामी करते हैं, मेरे खिलाफ स्तरहीन बातें करते हैं कि मैं बिमारी से त्रस्त हूँ। इसलिए मैंने अनशन (मरने तक उपवास) करने का फैसला किया है।"

शासन रक्षक देव धरणेंद्र ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह बिल्कुल निर्दोष हैं और उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया। धरणेंद्र के कहने पर अभयदेवसूरिजी श्रावक संघ के साथ स्तम्भनग्राम में सेढ़ी नदी के तट पर आए। आचार्यश्रीजी ने उस स्थान की खोज की जहां एक गाय अपने आप दूध दे रही थी। जल्द ही उन्होंने जयतिहुअण नामक 32 श्लोकों के एक स्तोत्र की रचना की। जैसे ही स्तोत्र की रचना पूर्ण हुई, श्री स्तम्भन पार्श्वनाथ की एक बहुत ही प्राचीन और रत्न से बनी मूर्ति जमीन के नीचे से निकली। श्री संघ ने मूर्ति को प्रक्षाल कराने की सभी क्रियाएँ की और जैसे ही पवित्र जल आचार्य अभयदेवसूरिजी के शरीर पर छिटका गया, वे रोग से मुक्त हो गए। आचार्यश्री अपने पूर्व स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर चुके। वर्तमान में वही मूर्ति खंभात के मंदिर में स्थापित है।

तब आचार्य ने नवांगी भाष्य लिखने का कार्य पूर्ण किया और गुजरात के कपडवंज गाँव में कालधर्म (स्वर्गरोहण - स्वर्ग में निवास) प्राप्त किया। उनकी समाधि (एक स्मारक संरचना), वही के एक तपागच्छ उपाश्रय में मौजूद है।

संदर्भ : प्रभावक चारित्र